गौमाता राष्ट्रमाता
स्वतः स्फूर्त गौ-प्रतिष्ठा आन्दोलन

हिंदी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No.: MAHHIN/2008/24084 ■ www.rashtriyaswabhimaan.com

● वर्ष : 17 ● अंक : 152 ● मुंबई, बुधवार, 4 फरवरी 2026 ● पृष्ठ : 6 ● मूल्य 1 रुपए

डबल इंजन सरकार में भी लापता हो रहा युवा

दिल्ली से 27 दिन में 807 गायब, बच्चे-लड़कियां सबसे असुरक्षित

आर. एस. नेटवर्क। संवाददाता

नई दिल्ली। देश और राजधानी दोनों जगह भारतीय जनता पार्टी की "डबल इंजन सरकार" होने के बावजूद अपराध और लापता लोगों के आंकड़े डराने वाली तस्वीर पेश कर रहे हैं। साल 2026 के पहले महज़ 27 दिनों में राजधानी दिल्ली से 807 लोगों के लापता होने के आंकड़े सामने आए हैं, जिनमें 137 बच्चे शामिल हैं। ये आंकड़े न सिर्फ राजधानी, बल्कि पूरे देश की आंतरिक सुरक्षा और सामाजिक हालात पर गंभीर सवाल खड़े करते हैं।

दिल्ली पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक, इन 807 मामलों में से सिर्फ 235 लोगों को ही ट्रेस किया जा सका है, जबकि 572 लोग अब भी लापता हैं। यानी हर दिन औसतन 27 लोग राजधानी से गायब हो रहे हैं। लापता लोगों में सबसे अधिक संख्या महिलाओं, किशोरियों और बच्चों की है, जो यह संकेत देती है कि भाजपा शासन में सबसे कमजोर वर्ग सबसे ज्यादा असुरक्षित होता जा रहा है।

चिंता यहीं खत्म नहीं होती। बीते 11 वर्षों में, यानी भाजपा शासन के दौरान, देश की राजधानी से ही 60 हजार से अधिक बच्चे लापता हुए हैं। इनमें से करीब 7 हजार बच्चों का आज तक कोई सुराग नहीं मिल पाया। आंकड़े बताते हैं कि हर साल लगभग 11 प्रतिशत बच्चे हमेशा के लिए सिस्टम की नज़रों से ओझल हो जाते हैं। सवाल यह है कि ये बच्चे कहां जाते हैं और उनके साथ क्या होता है—इसका जवाब सरकार और एजेंसियों के पास नहीं है।

भाजपा सरकार कानून-व्यवस्था को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि बताती रही है, लेकिन ज़मीनी हकीकत इससे उलट नजर आती है। नाबालिग लड़कियों का लापता होना, मानव तस्करी की आशंका और संगठित अपराध के संकेत यह बताते हैं कि अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और सुरक्षा व्यवस्था कमजोर।

आज हालात यह हैं कि डबल इंजन सरकार के दौर में दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरे देश से लाखों लोग लापता हो चुके हैं। ये आंकड़े केवल नंबर नहीं, बल्कि सिस्टम की विफलता और शासन की जवाबदेही पर एक कठोर सवाल हैं, जो देश को भीतर से झकझोर रहे हैं।

अमेरिका—रूस के बीच न्यू स्टार्ट खत्म, तीसरे विश्व युद्ध की आहट तेज

नई दिल्ली। दुनिया एक बार फिर विनाश के मुहाने पर खड़ी दिखाई दे रही है। अमेरिका और रूस के बीच परमाणु हथियारों को सीमित करने वाली आखिरी संधि 'न्यू स्टार्ट' के समाप्त होते ही वैश्विक सुरक्षा संतुलन बुरी तरह डगमगा गया है। दशकों से चले आ रहे शस्त्र नियंत्रण के प्रयासों का यह अंत अब तीसरे विश्व युद्ध की आशंका को और गहरा कर रहा है। 2010 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव के बीच हुई इस ऐतिहासिक संधि के तहत दोनों देशों ने अपने तैनात सामरिक परमाणु हथियारों की संख्या 1,550 तक सीमित रखने पर सहमति जताई थी। साथ ही मिसाइलों और बॉम्बर्स की अधिकतम संख्या 800 तय की गई थी। यह समझौता शीत युद्ध के बाद बने उस सुरक्षा कवच की आखिरी दीवार था, जो अब पूरी तरह ढह चुकी है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संधि के अंत पर सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि अगर न्यू स्टार्ट खत्म होती है तो होने दीजिए, हम इससे बेहतर समझौता करेंगे। व्हाइट हाउस के सूत्रों के मुताबिक, ट्रंप प्रशासन किसी भी नए परमाणु समझौते में चीन को शामिल करना चाहता है, जिसके पास इस समय करीब 600 परमाणु हथियार बताए जाते हैं। दूसरी ओर, रूस के उप विदेश मंत्री सर्गेई रयाबकोव ने बीजिंग दौरे के दौरान कहा कि दुनिया अब एक नई और खतरनाक वास्तविकता में प्रवेश कर चुकी है और रूस इसके लिए पूरी तरह तैयार है।

रूस ने न्यू स्टार्ट को एक साल के लिए बढ़ाने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन मॉस्को का दावा है कि अमेरिका की ओर से कोई ठोस प्रतिक्रिया नहीं मिली। फेडरेशन ऑफ अमेरिकन साइंटिस्ट्स (FAS) के अनुसार, अमेरिका के पास लगभग 5,177 और रूस के पास करीब 5,459 परमाणु हथियार मौजूद हैं।

भारत-अमेरिका ट्रेड डील: चीन-पाकिस्तान पिछड़े

भारत को 18% टैरिफ का बूस्टर डोज पर चुनौती भी

नई दिल्ली। वैश्विक व्यापार के मोर्चे पर भारत ने अपने एशियाई प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ते हुए एक बड़ी रणनीतिक जीत हासिल की है। सोमवार को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच हुई उच्च स्तरीय बातचीत के बाद, अमेरिका ने भारतीय सामानों पर आयात शुल्क यानी टैरिफ को 25% से घटाकर 18% कर दिया है। साथ ही, अमेरिकी प्रशासन ने यह भी कहा है कि यदि भारत ने रूस से तेल खरीदना बंद कर दिया तो इस वजह से लगा 25 प्रतिशत का अतिरिक्त टैरिफ भी नहीं लगाया जाएगा। इस फैसले ने भारतीय निर्यातकों को चीन, वियतनाम और पाकिस्तान और बांग्लादेश के मुकाबले उत्पादों की कीमत के मामले में सीधे तौर पर लाभ दे दिया है। हालांकि, इस डील के साथ कुछ चुनौतियां भी हैं। जैसे इस सौदे के बदले भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा नीति में बड़ा बदलाव करना पड़ सकता है, जिसमें रूसी तेल की खरीद बंद करना शामिल है। चीन और पड़ोसियों पर भारत की निर्णायक बढ़त इस नए टैरिफ स्ट्रक्चर ने दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के निर्यात बाजार का समीकरण बदल दिया है। अब तक टेक्सटाइल और मैन्युफैक्चरिंग में बांग्लादेश और वियतनाम भारत को कड़ी टक्कर दे रहे थे, लेकिन अब अमेरिकी बाजार में भारतीय सामान सस्ता होगा।

भारत और पड़ोसियों पर अमेरिकी टैरिफ

- भारतः 18% (नया टैरिफ)
- इंडोनेशियाः 19%
- पाकिस्तानः 19%
- बांग्लादेशः 20%
- वियतनामः 20%
- चीनः 34%

चीन के खिलाफ 34% के मुकाबले भारत पर केवल 18% का शुल्क लगना यह सुनिश्चित करता है कि अमेरिकी कंपनियां सप्लाई चेन के लिए अब बीजिंग के बजाय नई दिल्ली को प्राथमिकता देंगी

क्या है 'डील' की कीमत?

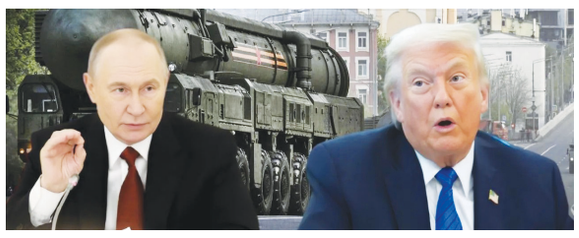

भले ही यह समझौता भारतीय निर्यात के लिए संजीवनी है, लेकिन इसके साथ जुड़ी शर्तें भारत की विदेश नीति की अग्निपरीक्षा ले सकती हैं। राष्ट्रपति ट्रंप ने सोशल मीडिया पर दावा किया कि पीएम मोदी ने 'रूसी तेल खरीदना बंद करने' और अमेरिका से अधिक तेल खरीदने पर सहमति जताई है। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने भी इसकी पुष्टि करते हुए साफ किया कि शर्त केवल तेल खरीद कम करने की नहीं, बल्कि 'पूरी तरह रोकने' की है। ट्रंप का तर्क है कि इससे रूस–यूक्रेन युद्ध को खत्म करने में मदद मिलेगी।

समझौते का बाजार पर क्या असर हुआ?

इस समझौते की खबर आते ही भारतीय शेयर बाजार में ऐतिहासिक तेजी देखी गई। सेंसेक्स 3,500 अंक उछला और निफ्टी में लगभग 5% की तेजी आई। इस एक खबर ने निवेशकों की संपत्ति में 13 लाख करोड़ रुपये का इजाफा कर दिया। बाजार इसे भारतीय मैन्युफैक्चरिंग और आईटी सेक्टर के लिए स्वर्णिम अवसर मान रहा है।

ट्रंप भारत से क्या उम्मीद कर रहे?

यह समझौता एकतरफा नहीं है। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि भारत भी अमेरिकी सामानों पर अपने टैरिफ और नॉन–टैरिफ बैरियर्स को घटाकर 'शून्य' करने की दिशा में आगे बढ़ेगा। इसे पारस्परिक सहयोग के सिद्धांत के तहत लागू किया गया है।

खबर संक्षेप

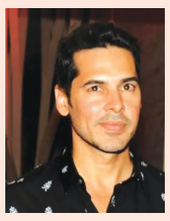

मिठी नदी सफाई घोटाला: ईडी ने 15 ठिकानों पर छापेमारी, 65 करोड़ रुपये के कथित गैरव्यवहार की जांच

मुंबई। मिठी नदी की सफाई परियोजना में ६५ करोड़ रुपये के कथित घोटाले के मामले में ईडी (एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट) ने शुक्रवार को मुंबई और केरल में १५ ठिकानों पर छापेमारी की। इस छापेमारी में बॉलीवुड अभिनेता डिनो मोरिया, मुंबई महापालिका के सहायक अभियंता प्रशांत रामगुडे और कुछ कंत्राटदारों के आवास और कार्यालय शामिल थे। ईडी अधिकारियों ने छापेमारी के दौरान महत्वपूर्ण आर्थिक दस्तावेज जब्त किए, जिनसे पैसों के लेन-देन और घोटाले की जानकारी मिलेगी। मिठी नदी की सफाई का काम २००७ से २०२१ के बीच पूरा होना था, लेकिन आरोप है कि वास्तविक काम नहीं हुआ। इस मामले में मुंबई महापालिका के तीन अधिकारी, पाँच कंत्राटदार, तीन मध्यस्थ और एक निजी कंपनी के दो कर्मचारी शामिल हैं। कुल १३ लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। अभिनेता डिनो मोरिया से पहले भी ईडी ने दो बार पूछताछ की थी। संदिग्ध है कि सफाई परियोजना के लिए मशीनिंग कंत्राट में फर्जीवाड़ा करके विशिष्ट कंत्राटदारों को फायदा पहुंचाया गया।

मेलबर्न में महात्मा गांधी की मूर्ति चोरी कांस्य प्रतिमा को काटकर ले गए चोर, भारत ने की कार्रवाई की मांग

मेलबर्न।ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में महात्मा गांधी की 426 किलोग्राम वजनी कांस्य प्रतिमा चोरी हो गई है। यह प्रतिमा ऑस्ट्रेलियन इंडियन कम्युनिटी सेंटर के बाहर लगी थी और भारतीय समुदाय के लिए सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्रतीकात्मक महत्व रखती थी। इस घटना ने भारतीय-ऑस्ट्रेलियाई समुदाय में गहरी चिंता और आक्रोश पैदा कर दिया है। भारत ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए ऑस्ट्रेलियाई अधिकारियों के समक्ष उठाया है और तुरंत कार्रवाई कर प्रतिमा की वापसी और जिम्मेदार व्यक्तियों की पहचान की मांग की है।

विदेश मंत्रालय के अधिकारी और आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने 3 फरवरी 2026 को मीडिया से बातचीत में कहा हम गांधी प्रतिमा के विनाश और चोरी की कड़ी निंदा करते हैं। यह प्रतिमा रोवविले, मेलबर्न के ऑस्ट्रेलियाई भारतीय कम्युनिटी सेंटर में स्थापित थी। हमने ऑस्ट्रेलियाई अधिकारियों से आग्रह किया है कि इस चोरी की तत्काल जांच हो, प्रतिमा को वापस लाया जाए और दोषियों को कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़े। इस प्रतिमा को नई दिल्ली स्थित इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस (ICCR) ने ऑस्ट्रेलिया को उपहार में दिया था। इसका उद्घाटन 12 नवंबर 2021 को ऑस्ट्रेलिया के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन ने किया था। उद्घाटन के 24 घंटे के भीतर ही अज्ञात लोगों ने प्रतिमा में तोड़फोड़ की थी।

'बोलने से रोकना लोकतंत्र पर कलंक' राहुल गांधी ने लोकसभा अध्यक्ष को लिखा पत्र

नई दिल्ली । कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला को पत्र लिखा है। पत्र में उन्होंने स्पष्ट किया है कि राष्ट्रपति के अभिभाषण पर बोलने से उन्हें रोकना लोकतंत्र के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है और राष्ट्रीय सुरक्षा पर चर्चा को रोकने का प्रयास है। राहुल गांधी ने अपने पत्र में लिखा 'कल जब मैं राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान बोल रहा था, तो आपने मुझे उस पत्रिका की प्रमाणिकता सत्यापित करने को कहा, जिसका मैं हवाला देना चाहता था। मैंने आज अपने भाषण की शुरुआत में दस्तावेज को प्रमाणित कर दिया। परंपरा के अनुसार, एक सदस्य जो किसी दस्तावेज का हवाला देना चाहता है, उसे उसका प्रमाणिकरण करना होता है।

RSS के 100वें वर्ष समारोह के लिए मोहन भागवत मुंबई में करेंगे दो दिवसीय सम्मेलन 'नया क्षितिज' का संबोधन

मुंबई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने मंगलवार को मुंबई में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी दी कि संघ के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 7-8 फरवरी को वर्ली स्थित नेहरू सेंटर में दो दिवसीय सम्मेलन 'नया क्षितिज' आयोजित किया जाएगा, जिसका उद्घाटन और संबोधन संघ प्रमुख मोहन भागवत करेंगे।

सुनील आंबेकर ने बताया कि इस सम्मेलन में लगभग 1200 गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया है, जिनमें से लगभग 900 लोग शामिल होने की संभावना है। इस दौरान फिल्म, खेल और राजनीति जगत की कई हस्तियां भी कार्यक्रम में भाग लेंगी। उन्होंने कहा कि फ़िल्म जगत से बोनी कपूर, आशा भोसले, और खेल क्षेत्र से बैडमिंटन खिलाड़ी चिराग शेट्टी सहित

कई प्रमुख हस्तियों को आमंत्रित किया गया है।

आंबेकर ने बताया कि सम्मेलन में सवाल-जवाब सत्र भी आयोजित किया जाएगा। उनका कहना था कि RSS समाज में परिवर्तन और समन्वय स्थापित करने पर काम कर रहा है और यह कार्यक्रम इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

उन्होंने यह भी कहा कि RSS की शुरुआत मुंबई में 1935 में हुई थी और वर्तमान में देशभर में संघ की 87,000 से अधिक शाखाएं हैं। संघ के कार्यकर्ता लगातार समाज के विभिन्न वर्गों से संपर्क बनाए रखते हैं और उनकी गतिविधियां इसी मकसद के तहत होती हैं।

UGC के नए नियमों को लेकर विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए आंबेकर ने कहा कि संघ समेत समाज के सभी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं और उनका मानना है कि सभी को साथ लेकर चलना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि मामला सुप्रीम कोर्ट में है और सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

AIMIM के नेता असदुद्दीन ओवैसी के हरे रंग वाले बयान पर उन्होंने कहा, ₹हजारों सालों से भारत देश का रंग भगवा रहा है और हमेशा वही रहेगा।

भिवंडी—वाडा रोड बदहाल, धूल और गड्ढों से जनता त्रस्त; नेता-अधिकारी आमने-सामने

भिवंडी। भिवंडी—वाडा रोड की जर्जर हालत और उड़ती धूल से आम नागरिकों की परेशानी चरम पर पहुंच गई है। ठाणे और पालघर जिलों को जोड़ने वाला यह प्रमुख मार्ग गड्ढों, अधूरे कंक्रीटीकरण और भारी प्रदूषण के कारण यात्रियों के लिए खतरा बन गया है। स्थानीय संगठनों के अनुसार, पिछले वर्षों में इस सड़क पर सैकड़ों लोगों की जान जा चुकी है।

श्रमजीवी संगठन के प्रवक्ता प्रमोद पवार ने आरोप लगाया कि पिछले 12 वर्षों में इस मार्ग पर 600 से अधिक मौतें हुई हैं और इसके लिए जिम्मेदार ठेकेदारों के सामने सरकारी तंत्र पूरी तरह लाचार नजर आ रहा है। उन्होंने सड़क मरम्मत के नाम पर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार का भी आरोप लगाया।

भिवंडी लोकसभा क्षेत्र के सांसद सुरेश म्हात्रे ने कहा कि सड़क निर्माण के लिए ठेकेदार को पूरी निधि उपलब्ध करा दी गई है और अब काम में तेजी लाई जानी चाहिए। उन्होंने भरोसा दिलाया कि पीडब्ल्यूडी अधिकारियों से मिलकर निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा कराने के निर्देश दिए जाएंगे।

वहीं, लोक निर्माण विभाग के उप अभियंता दत्तू

गीते ने बताया कि भिवंडी—वाडा—मनोर सड़क का कंक्रीटीकरण ईगल इंफ्रा कंपनी द्वारा निविदा शर्तों के अनुसार किया जा रहा है। भिवंडी में एक और पालघर जिले में दो स्थानों पर काम जारी है। उन्होंने कहा कि नालियों का काम पूरा होने के बाद ही सड़क निर्माण को अंतिम रूप दिया जाएगा।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि भारी वाहनों के गुजरते ही धूल का गुबार उठता है, जिससे सड़क पर चलना मुश्किल हो जाता है और हादसों का खतरा बढ़ जाता है। लोगों ने प्रशासन और जनप्रतिनिधियों से तत्काल सड़क सुधार और प्रदूषण नियंत्रण के ठोस कदम उठाने की मांग की है।

सुकरवाड़ी SRA प्रोजेक्ट में झुग्गीवासियों के हक पर बड़ा हमला

बॉम्बे हाईकोर्ट ने पूरे प्रोजेक्ट पर लगाया स्टे

आर.एस. नेटवर्क। सुजीत मिश्रा

मुंबई। बोरिवली स्थित सुकरवाड़ी का SRA प्रोजेक्ट, जो झुग्गीवासियों के पक्की छत के सपने का प्रतीक था, अब महाराष्ट्र सरकार, वीणा डेवलपर्स और थर कमर्शियल फाइनेंस के कथित गठजोड़ के कारण विवाद का केंद्र बन गया है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने इस प्रोजेक्ट पर कड़ी फटकार लगाते हुए पूरे प्रोजेक्ट पर स्टे लगा दिया है।

हाईकोर्ट ने सुनियोजित षड्यंत्र का आरोप लगाया

हाईकोर्ट ने कहा कि इस प्रोजेक्ट में सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के आदेशों की अवहेलना करते हुए सुनियोजित षड्यंत्र रचा गया। अवैध बैकडोर एंट्री, नियमों की हत्या और अधिकारियों की मिलीभगत सब कुछ खुलेआम हुआ, और सरकार इस प्रक्रिया में मूकदर्शक नहीं बल्कि सहभागी बनी रही। कोर्ट ने एमनेस्टी स्कीम के नाम पर डेवलपर की नियुक्ति को ₹दस्ताने पहनकर किया गया भ्रष्टाचार₹ करार दिया और चेतावनी दी कि यह न्यायपालिका की अवमानना है।

आम झुग्गीवासी जगतदेव कुशवाहा ने सच्चाई अदालत में रखी

इस लड़ाई की आवाज बने हैं जगतदेव कुशवाहा, जो कोई रसूखदार बिल्डर नहीं बल्कि आम झुग्गीवासी हैं। महीनों तक फाइलें खंगालने, सैकड़ों दस्तावेज जुटाने और अदालत के चक्कर लगाने के बाद उन्होंने सरकार–डेवलपर गठजोड़ को कठघरे में खड़ा किया। यह याचिका WP/3322/2025 एडवोकेट स्वप्निल बंगूर, विनोद संघविकर और शुभम सोनावले ने अदालत में दमदार पैरवी करते हुए दायर की।

अदालत का स्पष्ट आदेश: जानबूझकर की गई अवहेलना

हाईकोर्ट ने कहा, यह सिर्फ प्रक्रियागत गलती नहीं बल्कि जानबूझकर की गई अवहेलना है। अदालत ने तत्काल प्रभाव से महाराष्ट्र सरकार की सभी कार्यवाहियों, डेवलपर की सभी नियुक्तियों और एमनेस्टी स्कीम से जुड़े हर आदेश पर स्टे लगा दिया।

सवाल उठता है: SRA योजनाएं किसके लिए?

सवाल उठता है कि क्या SRA योजनाएं वास्तव में झुग्गीवासियों के लिए हैं या सिर्फ बिल्डरों के मुनाफे के लिए? यह फैसला सिर्फ एक प्रोजेक्ट पर रोक नहीं है, बल्कि पूरे सिस्टम को चेतावनी है। झुग्गीवासी अब खामोश नहीं रहेंगे और न्याय की लड़ाई और तेज होगी।

मणिपुर के नए सीएम होंगे युमनाम खेमचंद सिंह

गोविंद बनेंगे गृह मंत्री, आज शपथ ग्रहण

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

इंफाल। युमनाम खेमचंद सिंह मणिपुर के नए सीएम होंगे। उन्हें बीजेपी विधायक दल का नेता चुना गया है। वो बुधवार शाम मणिपुर राजभवन में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। इसके साथ हीगोविंद दास को राज्य का गृह मंत्री बनाया जाएगा। दो उपमुख्यमंत्री भी होंगे। बात करें खेमचंद की तो वो मेतई सुमदाय से आते हैं। सिंगजामेई विधानसभा सीट से विधायक चुने जाने के साथ ही वो इंजीनियर रहे हैं। 62 साल से खेमचंद सिंह बीरेन सरकार में नगर प्रशासन और आवास विभाग के मंत्री थे। उनका सियासी रसूख इस बात से समझा जा सकता है कि वो 2022 में सीएम पद के दावेदार थे। खेमचंद संघ के करीबी माने जाते हैं।

मणिपुर में नई सरकार बनाने की कवायद तेज हो गई है। राष्ट्रपति शासन को हटाया जा रहा है। इसी कड़ी में बीजेपी ने मणिपुर विधायक दल के नेता के चुनाव के लिए राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग को आब्जर्वर नियुक्त किया था। इसके लिएबीजेपी विधायक दल की आज दिल्ली में बैठक हुई। 4 फरवरी को नई सरकार का शपथ ग्रहण! बीजेपी मुख्यालय में हुई इस बैठक में युमनाम खेमचंद सिंह को विधायक दल का नेता चुना गया। इस मौके पर तरुण चुग और अन्य वरिष्ठ नेताओं ने उनका मुंह मीठा कराया और शुभकामनाएं दीं।बताया जा रहा है कि खेमचंद के चुनाव के बाद अब 4 फरवरी को नई सरकार का शपथ ग्रहण कराया जा सकता है।

राष्ट्रपति से मिलने जा सकते हैं विधायक

इस तरह से मणिपुर में नए मुख्यमंत्री के शपथ लेने के साथ ही सरकार के गठन की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। उधर, खेमचंद को विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद अब संभावना जताई जा रही है कि मणिपुर के सभी विधायक राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिलने राष्ट्रपति भवन जा सकते हैं।

रेस में थे ये नाम, जिन्हें खेमचंद ने पछाड़ा मुख्यमंत्री की रेस में गोविंद दास और टी विश्वजीत सिंह सबसे आगे थे। गोविंद दास 7 बार के विधायक हैं। उन्हें बिरेन सिंह का समर्थन भी है। बता दें कि पहले विधायकों की बैठक इंफाल में होनी थी लेकिन कुकी समुदाय के पार्टी से जुड़े विधायक दिल्ली में केंद्रीय नेतृत्व के साथ बैठक करना चाहते थे।

मैतेई और कुकी के बीच संघर्ष

मई 2023 में मैतेई और कुकी जातियों के बीच जातीय हिंसा हुई। इसमें अब तक 260 से अधिक लोग मारे गए। हजारों लोग बेघर हो गए। पिछले साल 13 फरवरी को बीरेन सिंह ने सीएम पद से इस्तीफा दिया। फिर केंद्र सरकार ने राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया था।

मणिपुर का सियासी गणित 60 सदस्यीय विधानसभा वाले मणिपुर में बीजेपी के पास कुल 37 विधायक हैं। एनडीए के सहयोगी दल में एनपीपी के 6 और नागा पीपुल्स फ्रंट (एपीएफ) के भी 5 विधायक हैं। मणिपुर में पहली बार 13 फरवरी, 2025 को 6 महीने के लिए राष्ट्रपति शासन लगाया गया था। फिर अगस्त 2025 में इसे और छह महीने के लिए बढ़ा दिया गया था।

जब उंगलियों की आदतें उम्र से बड़ी हो जाएं: बुजुर्ग, स्क्रीन और टूटता सामाजिक ताना-बाना

आमतौर पर डिजिटल लत की चर्चा होते ही बच्चों, किशोरों और युवाओं की तस्वीर सामने आ जाती है। यह मान लिया गया है कि स्मार्ट फोन, टैबलेट और इंटरनेट मीडिया का सबसे बड़ा असर नई पीढ़ी पर पड़ रहा है। लेकिन यह धारणा अब अधूरी और भ्रामक साबित हो रही है। तेजी से बदलते सामाजिक परिदृश्य में स्क्रीन स्क्रॉलिंग का सम्मोहन बुजुर्गों को भी उसी तरह जकड़ रहा है, जैसे वह युवाओं को जकड़ चुका है। फर्क सिर्फ इतना है कि इस उम्र में इसके दुष्परिणाम कहीं अधिक गहरे, जटिल और दीर्घकालिक हो सकते हैं। हाल के समय में सामने आए ऐसे मामलों ने इस खतरे को उजागर किया है, जिनमें सेवानिवृत्ति के बाद मोबाइल की लत के कारण बुजुर्गों को गंभीर शारीरिक और मानसिक व्याधियों का सामना करना पड़ा, यहां तक कि अस्पताल में भर्ती कराने की नौबत आ गई। सेवानिवृत्ति के बाद जीवन का एक नया चरण शुरू होता है। यह वह समय होता है, जब व्यक्ति पर कामकाजी जिम्मेदारियों का दबाव नहीं रहता और उसके पास स्वयं के लिए समय होता है। यह समय शौक पूरे करने, सामाजिक रिश्तों को मजबूत करने, स्वास्थ्य पर ध्यान देने और परिवार के साथ संवाद बढ़ाने के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। लेकिन विडंबना यह है कि इसी खालीपन को भरने के लिए बहुत से बुजुर्ग वास्तविक दुनिया की ओर लौटने के बजाय वर्चुअल दुनिया में डूबते चले जा रहे हैं। दिन का बड़ा हिस्सा स्क्रीन पर उंगलियां चलाते हुए बीत रहा है। शुरुआत में यह मनोरंजन और जानकारी का साधन लगता है, लेकिन धीरे-धीरे यह आदत लत का रूप ले लेती है। हाल में सामने आए कुछ मामले इस सच्चाई को बेहद चिंताजनक ढंग से सामने रखते हैं। एक बुजुर्ग, जो सेवानिवृत्ति के बाद मोबाइल फोन में इतना उलझ गया कि शारीरिक गतिविधियां लगभग शून्य हो गईं। लगातार बैठकर या लेटकर स्क्रीन देखने से उनकी रीढ़, आंखों और मानसिक स्थिति पर गंभीर असर पड़ा। परिवार को उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। इसी तरह एक अन्य मामले में लगभग 55 वर्षीय व्यक्ति, जो सुरक्षा गार्ड की नौकरी करता था, ड्यूटी के दौरान भी फोन में डूबा रहता था। लापरवाही के कारण नौकरी चली गई, लेकिन बेरोजगारी और चिंता के बावजूद मोबाइल की लत नहीं छूटी। घंटों एक ही मुद्रा में बैठे रहने और निष्क्रिय जीवनशैली के कारण रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से में घाव तक हो गए। ये उदाहरण केवल व्यक्तिगत नहीं हैं, बल्कि एक बढ़ती सामाजिक समस्या की ओर इशारा करते हैं। दुनिया भर में बच्चों को स्क्रीन की अधिकता से बचाने के लिए नियम बनाए जा रहे हैं। स्कूलों में मोबाइल प्रतिबंधित किए जा रहे हैं, अभिभावकों को समय-सीमा तय करने की सलाह दी जाती है और विशेषज्ञ लगातार चेतावनी दे रहे हैं। लेकिन बुजुर्गों की स्क्रीन आदतों पर न तो परिवार गंभीरता से ध्यान दे रहा है और न ही समाज। स्वयं वरिष्ठजन भी अक्सर इसके नुकसान को समझ नहीं पाते। उन्हें लगता है कि अब जिम्मेदारियां कम हैं, इसलिए फोन या टीवी पर समय बिताने में क्या हर्ज है। समस्या समय बिताने की नहीं, बल्कि अति की है। उम्र के इस पड़ाव पर शरीर पहले से ही कई जैविक परिवर्तनों से गुजर रहा होता है। हड्डियां कमजोर होती हैं, मांसपेशियों की सक्रियता घटती है, आंखों की रोशनी कम होती है और नींद का चक्र प्रभावित होता है। ऐसे में लंबे समय तक स्क्रीन पर टिके रहना इन समस्याओं को और बढ़ा देता है। ग्लोबल वेब इंडेक्स की रिपोर्ट बताती है कि 65 वर्ष से अधिक आयु के लोग अपना लगभग 50 प्रतिशत समय डिजिटल डिवाइस के साथ बिता रहे हैं। टीवी, स्मार्ट फोन, टैबलेट और लैपटॉप के जरिए वे सोशल मीडिया, ऑनलाइन शॉपिंग, बैंकिंग, गेमिंग और मनोरंजन में समय लगा रहे हैं। यह आंकड़ा बताता है कि डिजिटल दुनिया अब बुजुर्गों के दैनिक जीवन का भी केंद्रीय हिस्सा बन चुकी है। इस अत्यधिक डिजिटल व्यस्तता का असर केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह मानसिक स्थिति और सामाजिक रिश्तों को भी गहराई से प्रभावित कर रही है। नींद की कमी, चिड़चिड़ापन, व्यग्रता, अकेलापन और अवसाद जैसी समस्याएं बुजुर्गों में तेजी से बढ़ रही हैं। विडंबना यह है कि सोशल मीडिया पर सैकड़ों वर्चुअल संपर्कों के बावजूद वास्तविक जीवन में संवाद का दायरा सिकुड़ता जा रहा है। पहले मोहल्लों में बुजुर्ग एक-दूसरे के घर जाकर हालचाल पूछते थे, पार्कों में बैठकर लंबी बातचीत होती थी और सामूहिक गतिविधियां अकेलेपन को दूर रखती थीं। अब बहुत से बुजुर्ग अपने आसपास रहने वाले लोगों से भी कटते जा रहे हैं। वर्चुअल दुनिया का जुड़ाव संकट के समय किसी काम नहीं आता। अकेले रहने वाले बुजुर्गों को अचानक स्वास्थ्य समस्या हो जाए, तो मदद वही लोग करते हैं, जो आसपास मौजूद हों। लेकिन स्क्रीन में डूबे रहने की आदत ने वरिष्ठजनों को अपने परिवेश से ही काट दिया है। उन्हें यह भी नहीं पता रहता कि पास में रहने वाले दूसरे बुजुर्ग कैसे हैं, किसे किस तरह की सहायता की जरूरत है। यह सामाजिक ताने-बाने के लिए एक खतरनाक संकेत है। डिजिटल व्यस्तता का एक और गंभीर पहलू साइबर सुरक्षा से जुड़ा है। बहुत से बुजुर्ग तकनीकी बारीकियों, प्राइवेसी सेटिंग्स और ऑनलाइन जोखिमों से पूरी तरह परिचित नहीं होते। वे आभासी दुनिया में जुड़े लोगों पर आसानी से भरोसा कर लेते हैं। इसी भरोसे का फायदा उठाकर ठग और जालसाज उनके बैंक खातों से पैसे उड़ाने में सफल हो जाते हैं। ऑनलाइन ठगी और साइबर अपराध के मामलों में बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। चूंकि डिजिटल डिवाइस सीधे बैंक खातों और निजी जानकारी से जुड़े होते हैं, इसलिए थोड़ी सी असावधानी भी भारी नुकसान का कारण बन सकती है। इस पूरी स्थिति का असर केवल बुजुर्गों तक सीमित नहीं रहता। इसका प्रभाव नई पीढ़ी पर भी पड़ता है। आज कई घरों और पार्कों में यह दृश्य आम हो गया है कि दादा-दादी बच्चों से बातचीत करने या उनके साथ खेलने के बजाय स्क्रीन में मग्न रहते हैं। रात को कहानी सुनाने की जगह रील्स स्क्रॉल की जा रही होती हैं। जब घर के बड़े ही संवाद से कट जाएं, तो बच्चों के लिए भी मानवीय रिश्तों की अहमियत कम होती जाती है। कामकाजी अभिभावकों की व्यस्तता के बीच यदि दादा-दादी भी डिजिटल दुनिया में खोए रहें, तो बच्चे और अधिक अकेले हो जाते हैं। ऐसे में स्मार्ट गैजेट्स ही उनके लिए साथी और मार्गदर्शक बन जाते हैं। यह एक चिंताजनक चक्र है, जिसमें बड़ों की डिजिटल लत बच्चों की डिजिटल निर्भरता को और मजबूत कर रही है। यदि वरिष्ठजन स्वयं संतुलित डिजिटल व्यवहार अपनाएं, तो वे नई पीढ़ी के लिए स्वाभाविक रोल मॉडल बन सकते हैं। उन्हें यह दिखा सकते हैं कि तकनीक का उपयोग सुविधा और जानकारी के लिए होना चाहिए, न कि जीवन से संवाद छीन लेने के लिए।

प्याज और मेथी का चमत्कारी जल: जब दादी-नानी के नुस्खे लौटाते हैं बालों की खोई ताकत

आज के समय में बालों का झड़ना केवल सौंदर्य से जुड़ी समस्या नहीं रह गई है, बल्कि यह तनाव, बदलती जीवनशैली और बिगड़ते खान-पान का आईना बन चुका है। खासकर महिलाएं लंबे, घने और मजबूत बालों का सपना संजोए रहती हैं, लेकिन हकीकत यह है कि महंगे शैंपू, सीरम और ट्रीटमेंट के बावजूद बालों की हालत सुधरने का नाम नहीं लेती। बाल धोने के बाद हाथ में आए गुच्छे, कंघी में उलझे टूटे बाल और तकिए पर बिखरे रेशे धीरे-धीरे आत्मविश्वास को भी कमजोर करने लगते हैं। ऐसे में जब बाजार के प्रोडक्ट थकाने लगते हैं, तब ध्यान जाता है उन पुराने घरेलू नुस्खों की ओर, जो पीढ़ियों से आजमाए जाते रहे हैं और जिनमें प्रकृति की असली ताकत छिपी होती है। बालों के झड़ने की सबसे बड़ी वजह स्कैल्प की कमजोरी मानी जाती है। धूल, प्रदूषण, पसीना और केमिकल युक्त प्रोडक्ट्स स्कैल्प के पोर्स को बंद कर देते हैं, जिससे बालों की जड़ों तक पोषण नहीं पहुंच पाता। ऊपर से नींद की कमी, मानसिक तनाव और हार्मोनल असंतुलन इस समस्या को और बढ़ा देते हैं। ऐसे में जरूरत होती है किसी ऐसे उपाय की, जो बालों को बाहर से नहीं, बल्कि जड़ों से मजबूत करे। प्याज और मेथी से बना घरेलू पानी इसी सिद्धांत पर काम करता है, जहां उपचार बालों की जड़ तक पहुंचकर धीरे-धीरे असर दिखाता है। प्याज को बालों के लिए किसी वरदान से कम नहीं माना जाता। इसमें मौजूद सल्फर बालों की जड़ों में रक्त संचार को बेहतर करता है, जिससे स्कैल्प तक ऑक्सीजन और पोषक तत्व सही मात्रा में पहुंचते हैं। यही कारण है कि प्याज का रस बालों के झड़ने को कम करने और नए बाल उगाने में मददगार माना जाता है। वहीं मेथी दाना प्रोटीन, आयरन और निकोटिनिक एसिड से भरपूर होता है, जो बालों की जड़ों को मजबूती देता है और टूटने की समस्या को कम करता है। रीठा इस मिश्रण में प्राकृतिक क्लींजर की भूमिका निभाता है, जो स्कैल्प को साफ रखता है और बिना केमिकल के बालों को स्वस्थ बनाता है। इस घरेलू पानी को बनाना जितना आसान है, उतना ही असरदार भी। जब पानी में प्याज, मेथी और रीठा को धीमी आंच पर पकाया जाता है, तो इनके पोषक तत्व पानी में घुल जाते हैं। पकने के दौरान रंग का बदलना इस बात का संकेत होता है कि औषधीय गुण पानी में समा चुके हैं। ठंडा होने के बाद यही पानी बालों के लिए एक तरह का टॉनिक बन जाता है, जिसे नियमित रूप से इस्तेमाल करने पर फर्क महसूस होने लगता है। यह कोई एक दिन का चमत्कार नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे बालों की जड़ों को मजबूत करने वाली प्रक्रिया है। इस पानी को बालों में लगाने का तरीका भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना इसे बनाना। जब स्कैल्प साफ और उलझनों से मुक्त होती है, तभी कोई भी नुस्खा सही असर दिखा पाता है। स्प्रे बोतल की मदद से इस पानी को सीधे स्कैल्प तक पहुंचाया जाता है, ताकि हर जड़ तक इसका पोषण पहुंचे। हल्के हाथों से की गई मसाज न केवल पानी को अच्छी तरह से स्कैल्प में समाने में मदद करती है, बल्कि ब्लड सर्कुलेशन को भी बेहतर बनाती है। आधे घंटे तक इसे बालों में लगे रहने देना जड़ों को पर्याप्त समय देता है, ताकि वे इस प्राकृतिक मिश्रण के गुणों को सोख सकें।

धूप, विटामिन-D और डायबिटीज़: क्या सूरज की किरणें सच में शुगर को काबू में ला सकती हैं?

डायबिटीज आज की जीवनशैली से जुड़ी उन बीमारियों में से है, जो केवल दवा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पूरे दिनचर्या, सोच और शरीर की कार्यप्रणाली को प्रभावित करती है। खान-पान, दवाइयों और नियमित जांच के साथ-साथ लोग अक्सर यह जानना चाहते हैं कि क्या कोई ऐसा प्राकृतिक तरीका भी है, जो ब्लड शुगर को संतुलित रखने में सहायक हो सके। इसी जिज्ञासा के बीच धूप को लेकर एक सवाल बार-बार उठता है कि क्या रोज़ थोड़ी देर धूप में बैठने से ब्लड शुगर लेवल कम हो सकता है या यह सिर्फ एक आम धारणा भर है। यह सवाल इसलिए भी अहम हो जाता है क्योंकि आज के समय में लोग धूप से बचने लगे हैं, घरों और दफ्तरों में बंद रहते हैं और सूरज की किरणों से मिलने वाले प्राकृतिक लाभों से दूर होते जा रहे हैं। डायबिटीज को अगर केवल बढ़े हुए ब्लड शुगर के रूप में देखा जाए तो इसकी गहराई समझ में नहीं आती। असल में यह बीमारी शरीर के मेटाबॉलिज्म, हार्मोनल संतुलन, नींद, तनाव और शारीरिक गतिविधियों से गहरे स्तर पर जुड़ी होती है। जब इंसुलिन ठीक से काम नहीं कर पाता या शरीर इंसुलिन के प्रति संवेदनशील नहीं रहता, तब शुगर लेवल असंतुलित होने लगता है। ऐसे में सवाल उठता है कि धूप इस पूरी प्रक्रिया में कहां फिट बैठती है। डॉक्टर जी. कृष्ण मोहन रेड्डी जैसे विशेषज्ञों का मानना है कि धूप डायबिटीज का इलाज नहीं है, लेकिन यह शरीर के भीतर कुछ ऐसे सकारात्मक बदलाव ला सकती है, जो शुगर कंट्रोल में सहायक भूमिका निभाते हैं। सूरज की रोशनी विटामिन-D का सबसे प्राकृतिक और प्रभावी स्रोत मानी जाती है। जब सुबह की हल्की धूप त्वचा पर पड़ती है, तो शरीर अपने आप विटामिन-D का निर्माण करता है। यह विटामिन हड्डियों के लिए ही नहीं, बल्कि इम्यून सिस्टम, मांसपेशियों की मजबूती और हार्मोनल संतुलन के लिए भी बेहद जरूरी है। कई शोधों में यह बात सामने आई है कि जिन लोगों में विटामिन-D की कमी पाई जाती है, उनमें इंसुलिन रेजिस्टेंस का खतरा अधिक होता है। इसका मतलब यह है कि शरीर में मौजूद इंसुलिन ठीक से काम नहीं कर पाता, जिसके कारण ब्लड शुगर बढ़ने लगता है। ऐसे में जब विटामिन-D का स्तर सुधरता है, तो इंसुलिन की कार्यक्षमता में भी सुधार देखा जा सकता है। यहां यह समझना जरूरी है कि धूप सीधे तौर पर ब्लड शुगर को घटाने वाली कोई जादुई दवा नहीं है। अगर कोई व्यक्ति यह सोचता है कि वह दवा छोड़कर सिर्फ धूप में बैठकर डायबिटीज कंट्रोल कर लेगा, तो यह एक बड़ी गलतफहमी है। डॉक्टरों के अनुसार धूप का असर सपोर्टिव होता है, यानी यह डाइट, एक्सरसाइज और दवाओं के साथ मिलकर काम करती है। जो लोग रोज़ाना थोड़ी देर धूप लेते हैं, उनमें मेटाबॉलिज्म बेहतर रहता है, शरीर अधिक एक्टिव महसूस करता है और इंसुलिन सेंसिटिविटी में हल्का-फुल्का सुधार देखा जा सकता है। यही वजह है कि ऐसे लोगों में शुगर फ्लक्चुएशन अपेक्षाकृत कम हो सकता है।

बसंत की थाली में उतरता मौसम

खुशबू, स्वाद और सेहत का उत्सव

बसंत ऋतु आते ही प्रकृति जैसे नई सांस लेने लगती है। सर्द हवाओं की कठोरता पीछे छूट जाती है और सूर्य की किरणें न ज्यादा तीखी होती हैं, न सुस्त। यही संतुलन जीवन में भी उतर आता है। खेतों में सरसों की पीली चादर बिछ जाती है, आम की बौर से हवा महकने लगती है और घरों की रसोई में भी यह बदलाव साफ महसूस होता है। बसंत केवल मौसम का परिवर्तन नहीं, बल्कि भोजन की संस्कृति में भी एक कोमल और सुगंधित मोड़ है, जहां स्वाद और स्वास्थ्य साथ-साथ चलते हैं। इस ऋतु में शरीर अपने आप भारी और तैलीय भोजन से दूरी चाहता है। ठंड में जमा आलस्य टूटने लगता है और हल्का, ताजा और पौष्टिक भोजन मन को भी भाता है। यही कारण है कि बसंत में बनने वाले व्यंजन न तो ज्यादा मसालेदार होते हैं और न ही एकरस। इनमें हरी सब्जियों की मिठास, देसी घी की सौम्य खुशबू और मसालों का संतुलित प्रयोग होता है। ये व्यंजन शरीर को धीरे-धीरे शुद्ध करते हैं, पाचन को दुरुस्त करते हैं और बदलते मौसम में ऊर्जा बनाए रखते हैं। बसंत की रसोई की कल्पना करते ही ताजे हरे चनों की छवि उभरती है, जिनका स्वाद कुछ-कुछ मीठा और मिट्टी की सौंधी खुशबू से भरा होता है। जब ये हरे चने मुलायम पनीर के साथ देसी घी में पकते हैं, तो साधारण सामग्री भी खास बन जाती है। पहले हरे चनों को हल्का उबालकर उनका कच्चापन दूर किया जाता है। फिर कड़ाही में घी गरम होते ही जीरा चटकता है, अदरक और हरी मिर्च अपनी सुगंध छोड़ते हैं। मसालों की हल्की परत के बाद जब चने कड़ाही में उतरते हैं, तो वे मसालों को धीरे-धीरे अपने भीतर समेट लेते हैं। अंत में पनीर के टुकड़े और ऊपर से थोड़ी सी मलाई इस व्यंजन को बसंत की सौम्यता दे देती है। यह सब्जी न केवल स्वादिष्ट होती है, बल्कि शरीर को ताकत भी देती है, बिना किसी भारीपन के। सी तरह बसंत में हरी मटर का स्वाद अपने शिखर पर होता है। इस मौसम में बनी मलाईदार मटर की सब्जी किसी उत्सव से कम नहीं लगती। ताजी मटर को हल्का उबालकर उनका रंग और मिठास सुरक्षित रखी जाती है। घी में भुना प्याज, अदरक और हरी मिर्च जब मटर से मिलते हैं, तो एक सौम्य स्वाद का आधार बनता है। काजू की महीन पेस्ट और दूध या मलाई मिलते ही यह सब्जी रेशमी हो जाती है। धीमी आंच पर पकती हुई यह मटर न तो तीखी होती है, न फीकी, बल्कि दोपहर के भोजन में रोटी के साथ एक सुकून भरा अनुभव देती है। बसंत की थाली में दाल का स्थान भी अलग होता है। इस मौसम में मूंग दाल और ताजी मेथी का संगम शरीर के लिए किसी औषधि से कम नहीं। मूंग दाल हल्की और सुपाच्य होती है, वहीं मेथी रक्त को शुद्ध करने और पाचन को बेहतर बनाने में सहायक मानी जाती है। जब अच्छी तरह गली मूंग दाल में घी में तले लहसुन और जीरे का तड़का लगता है और उसमें ताजी कटी मेथी मिलाई जाती है, तो दाल की खुशबू पूरे घर में फैल जाती है। मेथी को बस उतना ही पकाया जाता है कि उसकी कड़वाहट नरम पड़ जाए और उसका पोषण बना रहे। यह दाल खाने के बाद शरीर में हल्कापन और मन में ताजगी भर देती है, ठीक वैसे ही जैसे बसंत की हवा। बसंत का रंग-बिरंगा रूप सब्जियों के पुलाव में भी नजर आता है। बासमती चावल के लंबे, खुशबूदार दाने जब हरी मटर, गाजर और बीन्स के साथ घी में पकते हैं, तो थाली में मौसम उतर आता है। घी में डाले गए तेजपत्ता, इलायची और लौंग की खुशबू चावल के हर दाने में समा जाती है। यह पुलाव भारी मसालों से दूर रहता है और सब्जियों की प्राकृतिक मिठास को सामने लाता है। ढक्कन खोलते ही उठती खुशबू यह बता देती है कि भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि इंद्रियों का उत्सव भी है। और जब बसंत की थाली मीठे के बिना अधूरी लगने लगे, तो केसरिया मीठे चावल मन को तृप्त कर देते हैं। ये न तो पारंपरिक मिठाई की तरह बोझिल होते हैं और न ही साधारण। खिले-खिले बासमती चावल, देसी घी की हल्की परत, केसर में भीगा दूध और सीमित मिठास मिलकर एक ऐसा स्वाद रचते हैं, जो भोजन के अंत में भी हल्कापन बनाए रखता है। ऊपर से काजू, बादाम और किशमिश की सजावट इस व्यंजन को बसंत की कोमल मिठास का प्रतीक बना देती है। असल में बसंत के व्यंजन हमें यह सिखाते हैं कि स्वाद और स्वास्थ्य के बीच कोई संघर्ष नहीं, बल्कि संतुलन हो सकता है। यह ऋतु हमें धीमे चलने, ताजे खाने और प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने का संदेश देती है। जब रसोई में मौसमी सब्जियां, हल्के मसाले और देसी तरीके से बने व्यंजन जगह बनाते हैं, तो भोजन केवल स्वाद का अनुभव नहीं रह जाता, बल्कि जीवन की लय से जुड़ जाता है। बसंत की बयार में पकता हर व्यंजन यही याद दिलाता है कि सादगी में भी अपार स्वाद और सुख छिपा होता है।

आसमान में सुरक्षा का भरोसा और जमीन पर न्याय की तलाश

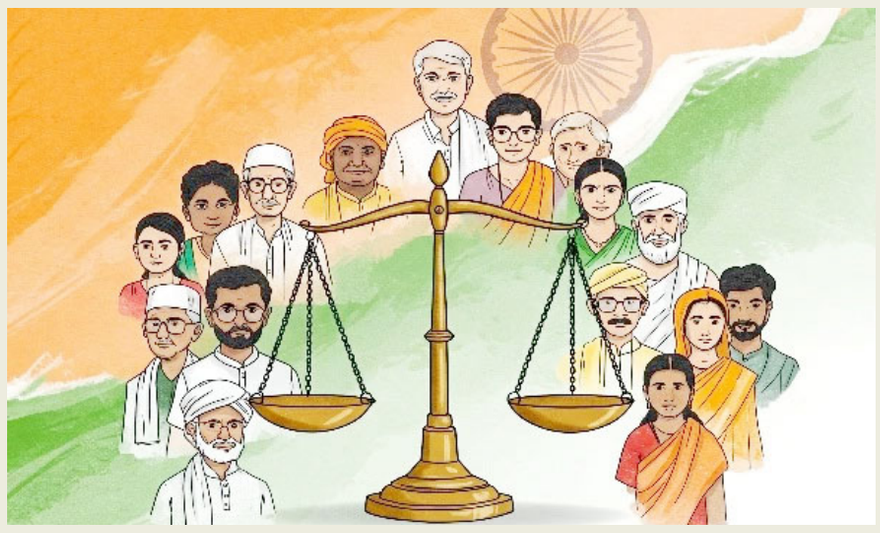

हवाई यात्रा को आधुनिक जीवन की सबसे सुरक्षित और तेज़ साधनों में गिना जाता है, लेकिन जब भी कोई विमान हादसे का शिकार होता है, तो वह केवल तकनीकी विफलता या मौसम की मार नहीं होता, बल्कि सैकड़ों परिवारों की जिंदगी को हमेशा के लिए बदल देने वाली त्रासदी बन जाता है। हाल ही में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के चार्टर्ड विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने और उसमें सवार लोगों की मृत्यु ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि ऐसी घटनाओं के बाद पीड़ित परिवारों के अधिकार क्या हैं और क्या उन्हें भी वही कानूनी सुरक्षा और मुआवजा मिलता है, जो किसी व्यावसायिक विमान हादसे में मिलता है। भारत में हवाई दुर्घटनाओं से जुड़ा मुआवजा तंत्र केवल संवेदनाओं पर नहीं, बल्कि कानून, अंतरराष्ट्रीय समझौतों और बीमा व्यवस्थाओं पर आधारित है। आम तौर पर लोगों की समझ में यही आता है कि यदि किसी विमान हादसे में किसी यात्री की जान जाती है, तो एयरलाइन या विमान कंपनी की जिम्मेदारी बनती है कि वह मुआवजा दे। लेकिन वास्तविकता इससे कहीं अधिक जटिल है। मुआवजे का अधिकार इस बात पर निर्भर करता है कि विमान किस श्रेणी का था, उड़ान व्यावसायिक थी या चार्टर्ड, और दुर्घटना किन परिस्थितियों में हुई।

व्यावसायिक उड़ानों के मामले में यात्रियों के अधिकार अपेक्षाकृत स्पष्ट और मजबूत हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मॉन्ट्रियल कन्वेंशन 1999 नामक समझौता लागू है, जिसे भारत समेत दुनिया के अधिकांश देशों ने स्वीकार किया है। इसके तहत यदि किसी विमान हादसे में यात्री की मृत्यु हो जाती है या वह गंभीर रूप से घायल होता है, तो एयरलाइन को मुआवजा देना ही पड़ता है। यहां सबसे अहम बात यह है कि पीड़ित परिवार को यह साबित करने की जरूरत नहीं होती कि दुर्घटना पायलट की गलती से हुई या विमान में तकनीकी खराबी थी। हादसा अपने आप में मुआवजे का आधार बन जाता है। यही कारण है कि पिछले वर्षों में हुए बड़े विमान हादसों में एयरलाइंस ने बिना लंबी कानूनी प्रक्रिया के पीड़ित परिवारों को करोड़ों रुपये का मुआवजा दिया। लेकिन जब बात चार्टर्ड विमानों की आती है, तो तस्वीर बदल जाती है। चार्टर्ड विमान आम तौर पर निजी उपयोग या विशेष उद्देश्यों के लिए उड़ान भरते हैं और इन्हें व्यावसायिक उड़ान की श्रेणी में नहीं रखा जाता। इसी वजह से मॉन्ट्रियल कन्वेंशन जैसे अंतरराष्ट्रीय नियम सीधे तौर पर इन पर लागू नहीं होते। इसका मतलब यह नहीं है कि चार्टर्ड विमान हादसे में जान गंवाने वालों के परिवारों को मुआवजा नहीं मिलेगा, बल्कि इसका अर्थ यह है कि मुआवजे का तरीका और कानूनी आधार अलग होता है।

चार्टर्ड विमान संचालकों के लिए थर्ड पार्टी इंश्योरेंस होना अनिवार्य माना जाता है। किसी दुर्घटना की स्थिति में इसी बीमा के तहत मुआवजा दिया जाता है। लेकिन यहां मुआवजा पहले से तय नहीं होता। यह मृतक की उम्र, उसकी आय, उस पर निर्भर परिवार के सदस्यों की संख्या और दुर्घटना की परिस्थितियों के आधार पर तय किया जाता है। कई मामलों में यह राशि 50 लाख रुपये से लेकर 2 करोड़ रुपये तक हो सकती है, लेकिन यह स्वचालित रूप से नहीं मिलती। यदि विमान कंपनी या बीमा कंपनी मुआवजा देने से इनकार करती है या राशि को लेकर विवाद होता है, तो पीड़ित परिवारों को अदालत का दरवाजा खटखटाना पड़ता है।

चार्टर्ड विमान हादसों में एक और जटिलता यह है कि मुआवजा पाने के लिए अक्सर किसी की गलती या लापरवाही साबित करनी पड़ती है। पायलट की चूक, विमान के रखरखाव में लापरवाही या तकनीकी खराबी जैसे पहलुओं को जांच और कानूनी प्रक्रिया के जरिए सिद्ध करना होता है। यदि यह साबित हो जाए कि दुर्घटना पूरी तरह प्राकृतिक कारणों, जैसे खराब मौसम, के चलते हुई और इसमें किसी की लापरवाही नहीं थी, तो मुआवजे से इनकार भी किया जा सकता है। यही वह बिंदु है जो चार्टर्ड विमान यात्रियों के अधिकारों को व्यावसायिक उड़ानों की तुलना में कमजोर बनाता है।

मुआवजा दावा करने की प्रक्रिया भी समयबद्ध है। सिविल कोर्ट में तीन वर्ष के भीतर और उपभोक्ता अदालत में दो वर्ष के भीतर दावा दायर किया जा सकता है। इस दौरान पीड़ित परिवार को कई तरह के दस्तावेज, आय प्रमाण, मेडिकल रिपोर्ट और दुर्घटना से जुड़े साक्ष्य प्रस्तुत करने पड़ते हैं। पहले से शोक और मानसिक आघात झेल रहे परिवार के लिए यह प्रक्रिया बेहद कठिन और थकाने वाली हो सकती है।

आज जब देश में हवाई यात्रा तेजी से बढ़ रही है और चार्टर्ड विमानों का उपयोग भी नेताओं, उद्योगपतियों और निजी संस्थाओं द्वारा बढ़ रहा है, तब यह सवाल और अधिक प्रासंगिक हो जाता है कि क्या चार्टर्ड विमानों में सफर करने वालों के अधिकार पर्याप्त रूप से सुरक्षित हैं। व्यावसायिक उड़ानों में यात्रियों को जिस तरह की कानूनी सुरक्षा और निश्चित मुआवजा मिलता है, वैसी स्पष्टता चार्टर्ड विमानों के मामले में नहीं दिखती। यही कारण है कि समय-समय पर यह मांग उठती रही है कि चार्टर्ड विमानों के लिए भी मुआवजे से जुड़े नियमों को अधिक पारदर्शी और एकरूप बनाया जाए।

अजित पवार के विमान हादसे ने यह भी दिखाया है कि चाहे यात्री कोई आम नागरिक हो या कोई बड़ा राजनीतिक चेहरा, दुर्घटना के बाद सवाल वही रहते हैं—न्याय कैसे मिलेगा और परिवार का भविष्य कैसे सुरक्षित होगा। मुआवजा किसी भी प्रियजन की कमी को पूरा नहीं कर सकता, लेकिन यह आर्थिक सुरक्षा जरूर देता है, जिससे परिवार को जीवन फिर से संभालने में मदद मिलती है।

अंततः हवाई यात्रा की सुरक्षा केवल तकनीक और प्रशिक्षण तक सीमित नहीं होनी चाहिए। इसके साथ-साथ यात्रियों के अधिकारों की स्पष्टता, मुआवजे की पारदर्शी व्यवस्था और पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदनशील कानूनी ढांचा भी उतना ही जरूरी है। जब तक आसमान में उड़ान के साथ जमीन पर न्याय का भरोसा नहीं जुड़ेगा, तब तक हर हादसा केवल एक खबर नहीं, बल्कि एक अधूरा सवाल बना रहेगा।

भिवंडी में संपत्ति कर वसूली को रफ्तार, फिर लागू हुई 'अभय योजना'; 65 करोड़ रुपये की वसूली

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

भिवंडी। भिवंडी निजामपुर महानगरपालिका ने बकाया संपत्ति कर की वसूली तेज करने के उद्देश्य से एक बार फिर 'अभय योजना' लागू कर दी है। योजना के तहत संपत्ति कर पर लगने वाले ब्याज में 100 प्रतिशत की पूरी छूट दी जा रही है। यह योजना 31 मार्च तक प्रभावी रहेगी। मनपा प्रशासन द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, आयुक्त अनमोल सागर के मार्गदर्शन में चालू वित्तीय वर्ष (अप्रैल 2025 से 31 जनवरी 2026) के दौरान अब तक 65 करोड़ रुपये का संपत्ति कर वसूल किया गया है। जबकि पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि में वसूली 46 करोड़ रुपये तक सीमित रही थी। इस तरह इस वर्ष 19 करोड़ रुपये की अतिरिक्त वसूली दर्ज की गई है।

मनपा के उपायुक्त बालकृष्ण क्षीरसागर ने बताया कि नवंबर 2025 में लागू की गई तीन चरणों वाली अभय योजना को करदाताओं से अच्छा प्रतिसाद मिला। तीन चरणों वाली योजना में पहला चरण (100% ब्याज माफी): 25.64 करोड़ रुपये की वसूली, दूसरा चरण (75% ब्याज माफी): 13.13 करोड़ रुपये की वसूली कुल 26,674 संपत्ति धारकों ने योजना का लाभ उठाते हुए तथा तिसरे चरण में 7.71 करोड़ रुपये की ब्याज माफी प्राप्त की।

चुनाव और रमजान को देखते हुए बड़ा निर्णय दिसंबर और जनवरी में चुनावी ड्यूटी के चलते वसूली अभियान की गति धीमी पड़ गई थी। वहीं, आगामी दिनों में रमजान माह की शुरुआत होने से भी कर वसूली प्रभावित होने की आशंका जताई जा रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए नगर निगम ने पहले दी जा रही 50% ब्याज छूट को बढ़ाकर 100% करने का फैसला लिया है।

collection up to 1st Feb-2025

Row Labels	Count of Net Collection	Sum of Net Collection2
प्रभाग क्र. 1	10938	13,90,83,871
प्रभाग क्र. 2	11706	14,23,02,297
प्रभाग क्र. 3	13076	15,65,83,587
प्रभाग क्र. 4	9331	12,33,76,926
प्रभाग क्र. 5	10433	9,04,37,617
(blank)		
Grand Total	55484	65,17,84,298

प्रभागवार कर वसूली का हाल

31 जनवरी तक 55,483 संपत्ति धारकों ने संपत्ति कर का भुगतान किया है। प्रभाग समितियों के अनुसार वसूली इस प्रकार प्रभाग समिति 3: 15.65 करोड़ रुपये, प्रभाग समिति 2: 14.23 करोड़ रुपये, प्रभाग समिति 1: 13.90 करोड़ रुपये, प्रभाग समिति 4: 12.33 करोड़ रुपये, प्रभाग समिति 5: 9.04 करोड़ रुपये हुआ है।

मार्च के बाद सख्त कार्रवाई के संकेत

उपायुक्त बालकृष्ण क्षीरसागर ने साफ शब्दों में कहा कि शहर के विकास कार्यों के लिए संपत्ति कर का भुगतान अनिवार्य है। उन्होंने चेतावनी दी कि मार्च के बाद बकायादारों के खिलाफ संपत्ति जब्ती सहित कड़ी कार्रवाई की जाएगी और किसी को भी राहत नहीं दी जाएगी।

मनपा क्षेत्र में कर चोरी पर अंकुश लगाने के लिए GIS (ज्योग्राफिकल इंफॉर्मेशन सिस्टम) सर्वेक्षण शुरू किया गया है। अब तक 8,600 संपत्तियों का सर्वे पूरा हो चुका है, जिसमें करीब 40% संपत्तियों (लगभग 3,400) के क्षेत्रफल में बदलाव पाया गया, इसके बावजूद इन पर कम कर अदा किया जा रहा था, ऐसे मामलों में 406 संपत्ति धारकों को नोटिस जारी कर दस्तावेजी साक्ष्य मांगे गए हैं। मनपा प्रशासन ने संकेत दिए हैं कि गलत जानकारी देकर कर चोरी करने वालों पर आगे और सख्त कदम उठाए जाएंगे।

एनवायर्नमेंटल जर्नलिज़्म में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ. प्रशांत रविंद्र सिंकर को ऑनरेरी डॉक्टरेट

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

ठाणे । एनवायर्नमेंटल स्कॉलर और वरिष्ठ पत्रकार डॉ. प्रशांत रविंद्र सिंकर को पर्यावरण पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके दीर्घकालिक और प्रभावशाली योगदान के लिए ऑनरेरी डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया है। पिछले ढाई दशकों से वे पर्यावरण संरक्षण, जल संवर्धन, जैव विविधता और सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों पर लगातार लेखन और जन-जागरूकता का कार्य कर रहे हैं।

डॉ. सिंकर ने अपनी पर्यावरण पत्रकारिता के माध्यम से प्रकृति संरक्षण, जल प्रबंधन, अनियंत्रित शहरीकरण से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट और ग्रामीण क्षेत्रों में जल समस्या जैसे अहम विषयों को समाज के केंद्र में लाने का कार्य किया है। उनके लेखों के जरिए न केवल आम नागरिकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ी है, बल्कि कई मामलों में प्रशासन और जनप्रतिनिधियों को भी नीतिगत निर्णय लेते समय पर्यावरणीय पहलुओं पर गंभीरता से विचार करना पड़ा है।

उनके इस सराहनीय कार्य को मान्यता देते हुए नई दिल्ली स्थित सामाजिक संस्था 'एस. शिक्षा फाउंडेशन' की ओर से यह सम्मान प्रमाण-पत्र के रूप में प्रदान किया गया। आयोजकों ने बताया कि इस सम्मान का उद्देश्य उन व्यक्तित्वों को प्रोत्साहित करना है, जिन्होंने सामाजिक, शैक्षणिक और पर्यावरणीय क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

सम्मान प्राप्त करने के बाद डॉ. प्रशांत रविंद्र सिंकर ने कहा कि पर्यावरण पत्रकारिता केवल खबरों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और प्रकृति के बीच एक जिम्मेदार सेतु का काम करती है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान उन्हें भविष्य में और अधिक ईमानदारी, प्रतिबद्धता और गंभीरता के साथ पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों पर काम करने की प्रेरणा देता है।

रिक्शा चालकों की आवाज बनता शिव परिवार

एड. विनय कुमार सिंह के मार्गदर्शन में जागरूकता पहल

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

ठाणे। शिव परिवार द्वारा संचालित शिव परिवार रिक्शा टैक्सी कल्याण समिति की ओर से ठाणे शहर के रिक्शा चालक भाइयों के हित में एक जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम संस्था के संस्थापक एडवोकेट विनय कुमार सिंह के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

बैठक में ट्रैफिक फाइन में छूट की कानूनी प्रक्रिया, पतपेढी लोन से जुड़ी सावधानियां, गारंटी से संबंधित नियम और वित्तीय लेन-देन में सतर्कता जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया। साथ ही बताया गया कि रिक्शा चालकों की समस्याओं के समाधान हेतु वे सोमवार से शनिवार, शाम 8:30 से 9:30 बजे तक शिवशांति प्रतिष्ठान कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

इस अवसर पर सभी रिक्शा चालक भाइयों ने ट्रैफिक नियमों के पालन, पुलिस प्रशासन को सहयोग और "हरित ठाणे" के निर्माण में सहभागिता का संकल्प लिया। एडवोकेट विनय कुमार सिंह ने कहा कि भविष्य में युवाओं, महिलाओं और छात्रों के लिए भी इसी तरह की पहल की जाएगी।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कमलेश सिंह, अरविंद गिरी, दिलीप सिंह, धीरेंद्र सिंह, आशीष सिंह, मनोज सिंह, मुकेश यादव, अशोक गिरी, अनिल ताटरे, राजू गिरी सहित शिवदूतों का सहयोग रहा।

ओसवाल नगर में जय श्रीराम रियल स्टेट के नये कार्यालय का उद्घाटन

आर .एस. नेटवर्क। प्रेम चौबे

नालासोपारा पूर्व । ओसवाल नगर स्थित ओम साईं श्रद्धा को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी के शॉप नंबर 3 में जय श्रीराम रियल स्टेट के नये कार्यालय का शुभारंभ मंगलवार को दोपहर 2:30 बजे संपन्न हुआ।

कार्यालय का उद्घाटन श्रीराम इंटरप्राइजेज के मालिक एवं समाजसेवी विनोद देवीशंकर तिवारी के कर-कमलों से किया गया। इस अवसर पर आचार्य पंडित विवेक मिश्रा ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजा-अर्चना कर नारियल फोड़कर शुभारंभ कराया। संस्थान के संचालक सुशील मिश्रा 'मालिक' ने बताया कि यह कार्यालय उपभोक्ताओं की सुविधा और विश्वास को प्राथमिकता देते हुए रियल स्टेट से जुड़े कार्यों का संचालन करेगा। उन्होंने कहा कि जनता का भरोसा ही संस्था की सबसे बड़ी ताकत है।

उद्घाटन समारोह में हरिकेश तिवारी, राकेश सिंह, राजेश पाल, संदीप सिंह, गोरेलाल मिश्रा, अनुराग दूबे, मुकेश गुप्ता, धीरेश उपाध्याय, मोहन मौर्या, आशीष मिश्रा, आशुतोष तिवारी, विनय गुप्ता, कुंदन जायसवाल सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मेट्रो-4 को बड़ी कामयाबी, भांडुप में 325 मीट्रिक टन के 3 विशाल स्टील स्पैन सफलतापूर्वक स्थापित

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

मुंबई। वडाला से कासारवडवली मेट्रो-4 मार्गिका पर मुंबई महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। भांडुप पश्चिम में कुल 325 मीट्रिक टन वजनी तीन विशाल स्टील स्पैन की सफलतापूर्वक स्थापना की गई, जिससे मेट्रो-4 परियोजना का एक जटिल चरण पूरा हो गया है। मेट्रो-4 के दूसरे चरण के कार्यों में अब तेजी आ गई है। इस चरण में कॅडबरी जंक्शन से गांधीनगर तक मेट्रो सेवा शुरू करने की तैयारी है। इसी के तहत भांडुप पश्चिम में अत्यधिक व्यस्त सड़क पर बिना यातायात बाधित किए, उत्कृष्ट योजना और समन्वय के साथ मात्र दो रातों में यह कार्य पूरा किया गया।

मेट्रो-4 की कुल लंबाई 32.32 किलोमीटर और मेट्रो-4ए की लंबाई 2.7 किलोमीटर है। दोनों मार्गिकाओं पर कुल 32 स्टेशन होंगे। पहले चरण में गायमुख से कॅडबरी जंक्शन के बीच 10.5 किलोमीटर के मार्ग पर मेट्रो सेवा शुरू की जाएगी, जिसमें कॅडबरी जंक्शन, माजीवाड़ा, कपूरबावड़ी, मानपाड़ा, टिकुजीनीवाड़ी, डोंगरी पाड़ा, विजय गार्डन, गोवनीवाड़ा, कासारवडवली और गायमुख स्टेशन शामिल हैं।

एमएमआरडीए ने स्टील स्पैन की स्थापना के लिए 8 हेवी ड्यूटी क्रेनों और 12 मल्टी-एक्सल वाहनों का उपयोग किया। इस दौरान 35 अभियंता, 100 से अधिक कुशल कामगार, 70 ट्रैफिक वार्डन और 25 से अधिक पुलिसकर्मी तैनात थे। अधिकारियों के अनुसार, मेट्रो-4 परियोजना को समय पर पूरा करने के लिए काम युद्धस्तर पर जारी है।

शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के समर्थन में बजरंग चौक पर सनातनियों का प्रदर्शन

प्रशासन के रवैये पर जताया आक्रोश

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

नालासोपारा पूर्व। तुलिंज रोड स्थित राधा-कृष्ण होटल के पास बजरंग चौक पर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी श्री अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज के समर्थन में समस्त सनातनियों द्वारा चौक सभा का आयोजन किया गया। सभा में मौनी अमावस्या के दौरान माघ मेला प्रशासन द्वारा संगम स्नान को लेकर अपनाए गए कथित अपमानजनक रवैये पर नाराजगी जताई गई।

वक्ताओं ने कहा कि प्रशासन के व्यवहार के कारण शंकराचार्य जी को बिना संगम स्नान किए ही काशी लौटना पड़ा। आरोप लगाया गया कि ब्राह्मण बटुकों के साथ हुई मारपीट की घटना पर मेला प्रशासन द्वारा माफी न मांगे जाने से संत समाज का अपमान हुआ है। उपस्थित सनातनियों ने इसे सुनियोजित मानसिकता करार दिया।

सभा में देशभर में एकजुट होकर माघ मेला प्रशासन और उत्तर प्रदेश सरकार के खिलाफ विरोध तेज करने का संकल्प लिया गया। इस दौरान गौ माता को राष्ट्रमाता घोषित करने के संकल्प को दोहराया गया तथा शंकराचार्य जी से प्रमाण मांगे जाने की घटना पर आपत्ति जताते हुए 40 दिन का समय देने की मांग की गई।

इस अवसर पर राष्ट्र प्रथम के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार पांडे, अखिल भारतीय जनसंघ के वरिष्ठ पदाधिकारी जगदीश शास्त्री, समाजसेवी विनोद तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार प्रेम चौबे सहित बड़ी संख्या में सनातनी उपस्थित रहे।

बहादूरशेख नाका उड्डाणपुल का 82% काम पूरा, मार्च 2026 तक चालू करने की तैयारी

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

चिपळूण । मुंबई–गोवा राष्ट्रीय महामार्ग पर बहादूरशेख नाका स्थित उड्डाणपुल के निर्माण कार्य ने रफ्तार पकड़ ली है और अब तक 82 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। राष्ट्रीय महामार्ग विभाग की ओर से मार्च 2026 से पहले पुल को यातायात के लिए खोलने के लिए युद्धस्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। एक ओर गर्डर लगाने का काम अंतिम चरण में है, वहीं दूसरी ओर संपर्क सड़कों का कार्य भी तेज़ी से जारी है।

पेढे–परशुराम से खेरशेत तक 34 किलोमीटर के चौड़ीकरण प्रोजेक्ट के चिपळूण चरण में बहादूरशेख नाका से प्रांत कार्यालय तक यह उड्डाणपुल बनाया जा रहा है। 16 अक्टूबर 2023 को पुल का एक हिस्सा गिरने के बाद विशेषज्ञ समिति ने जांच कर डिज़ाइन में बदलाव सुझाए थे। इसके तहत 40 मीटर के अंतर को घटाकर 20 मीटर किया गया और अतिरिक्त पिलर बनाए गए। नई संरचना के अनुसार सभी पिलर और पिलर कैप का काम पूरा हो चुका है तथा फिलहाल तीन टीमों और दो क्रेनों की मदद से गर्डर चढ़ाने का कार्य चल रहा है।

उड्डाणपुल के लिए कुल 182 स्लैब डाले जाने हैं, जिनमें से 62 स्लैब का काम पूरा हो चुका है। शेष स्लैब का कार्य अगले दो महीनों में पूरा करने का लक्ष्य है। पुल की कुल लंबाई 1,840 मीटर, चौड़ाई 45 मीटर और कुल 46 पिलर हैं।

वहीं पाग पावर हाउस चौक पर लगातार हो रहे हादसों से यातायात की समस्या बनी हुई है और इसे 'ब्लैक स्पॉट' घोषित किए जाने की आशंका जताई जा रही है। साथ ही उड्डाणपुल के नीचे कुछ स्थानों पर अतिक्रमण शुरू होने से निर्माण कार्य में बाधा आने की संभावना भी व्यक्त की जा रही है।

आरटीओ फाईन के नाम पर सायबर फर्जीवाड़ा

व्यवसायी से 1.34 लाख रुपये की ठगी

आर.एस.नेटवर्क। संवाददाता

मुंबई। घाटकोपर इलाके में सायबर अपराधियों ने आरटीओ दंड का झांसा देकर लोगों को फसाना शुरू कर दिया है। घाटकोपर पुलिस ने इस मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

घाटकोपर के निवासी राजेंद्र नार्वेकर के मोबाइल पर कुछ दिन पहले एक लिंक आई, जिसे उन्होंने आरटीओ की आधिकारिक लिंक समझा। लिंक में उनके वाहन का नंबर और 1,000 रुपये का दंड लिखा हुआ था। बिना पुष्टि किए उन्होंने दंड भरने का प्रयास किया।

दंड भरने के लिए क्रेडिट कार्ड की जानकारी देने पर उन्हें ओटीपी प्राप्त हुआ। ओटीपी दर्ज करने के तुरंत बाद उनके क्रेडिट कार्ड से 1,34,000 रुपये निकल गए। जब यह घटना उन्हें पता चली, तो नार्वेकर ने तुरंत बैंक की ग्राहक सेवा से संपर्क कर कार्ड ब्लॉक कराया और घाटकोपर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और लोगों को चेतावनी दी है कि ऐसी लिंक पर क्लिक न करें और केवल आधिकारिक माध्यमों से ही दंड का भुगतान करें।

बेकायदा पार्किंग पर अब FIR, अग्निशमन दल के बचाव कार्य में बाधा डालने वाले वाहन मालिक होंगे सीधे कार्रवाई के दायरे में

आर.एस.नेटवर्क। संवाददाता

मुंबई। आग या किसी अन्य आपातकालीन घटना के दौरान बचाव कार्य में बेकायदा पार्किंग वाले वाहन सबसे बड़ी बाधा बन रहे हैं। इसी को देखते हुए मुंबई महानगरपालिका ने निर्णय लिया है कि यदि किसी घटना स्थल पर वाहन पार्किंग के कारण अग्निशमन दल को बाधा पहुंचती है, तो संबंधित वाहन मालिकों के खिलाफ सीधे FIR दर्ज की जाएगी।

पालिका आयुक्त भूषण गगराणी और अतिरिक्त आयुक्त डॉ. अश्विनी जोशी ने स्पष्ट निर्देश जारी किए हैं कि अग्निशमन वाहन जब घटनास्थल पर बचाव कार्य के लिए पहुंचता है, तो यदि किसी बेकायदा खड़ी वाहन के कारण बचाव में विलंब होता है, तो अग्निशमन अधिकारी या कर्मचारी कार्य पूरा होने के बाद उस वाहन का नोंदणी नंबर और फोटो लेकर वरिष्ठ अधिकारियों की अनुमति से संबंधित पुलिस थाना में FIR दर्ज करेंगे।

इस प्रक्रिया से न केवल बेकायदा पार्किंग पर नियंत्रण रहेगा, बल्कि नागरिकों की ओर से भी इस बाबत तक्रारें अग्निशमन दल तक पहुँचेंगी। प्रशासन ने यह भी निर्देश दिए हैं कि यदि कोई नागरिक इस प्रकार की पार्किंग की शिकायत करता है, तो तक्रार को संबंधित पुलिस थाना, यातायात पुलिस विभाग और संबंधित विभाग कार्यालय में वर्गीकृत कर तक्रारकर्ता को जानकारी दी जाएगी। अधिकारियों का कहना है कि समय पर बचाव कार्य में विलंब होने पर जान-माल का नुकसान बढ़ सकता है, इसलिए यह कदम सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बेहद जरूरी है।

रायगड़ में भूमिपुत्रों के हक के लिए काँग्रेस का जोरदार प्रचार

"तीसरी मुंबई बनाम भूमिपुत्रों के हक़" की लड़ाई जारी रहेगी: हर्षवर्धन सकपाल

आर.एस.नेटवर्क। संवाददाता

मुंबई। काँग्रेस प्रदेशाध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाळ ने रायगड़ जिले में जोरदार प्रचार रैली कर भूमिपुत्रों के हक की लड़ाई को आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा कि देश कुछ उद्योगपतियों या मुठभर लोगों का नहीं है, बल्कि यह सभी आम नागरिकों का है। उन्होंने चेताया कि तिसरी मुंबई के नाम के तहत अब रायगड़ के क्षेत्र में भांडवलशाही अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रही है।

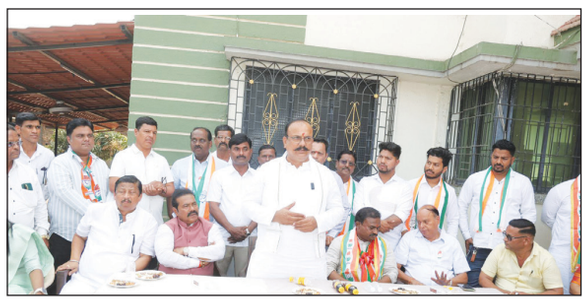

सपकाळ ने जिल्हा परिषद की चुनावी लड़ाई को भूमिपुत्रों के हक की लड़ाई बताते हुए कार्यकर्ताओं से अपील की, "अपनी परंपरा और अधिकार बनाए रखने के लिए एकजुट रहें और काँग्रेस–मविआ के उम्मीदवारों को विजयी बनाएं।" उन्होंने रायगड़ जिले के जासई, चिरनेर, सातिर्जे और चोंढी में रैलियों में भाग लिया और कार्यकर्ताओं के उत्साह को देखकर जीत की उम्मीद जताई।

उन्होंने कहा कि लोकनेते दि. बा. पाटील ने हमेशा भूमिपुत्रों के लिए संघर्ष किया। अब भांडवलशाही एक बड़ा खतरा बनकर सामने आई है, जिसे रोकने के लिए काँग्रेस–मविआ को विजयी बनाना आवश्यक है।

हर्षवर्धन सपकाळ ने नवी मुंबई विमानतळ के नामकरण पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा, "हमारी मांग है कि विमानतळ का नाम लोकनेते दि. बा. पाटील के नाम पर रखा जाए, लेकिन देवेंद्र फडणवीस इसे टालमटोल कर रहे हैं। अगर एनएम के पीछे से नरेंद्र मोदी का नाम लगाया गया तो इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा।"

इस दौरान रायगड़ जिल्हा काँग्रेस कमिटी के अध्यक्ष महेंद्र घरत, राजाभाऊ ठाकूर और अन्य काँग्रेस पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

संपादकीय

समता, कानून और विश्वविद्यालय: यूजीसी नियमों पर सुप्रीम कोर्ट की रोक का विस्तृत विश्लेषण

समता, न्याय और शिक्षा—ये तीनों किसी भी लोकतांत्रिक समाज के मूल स्तंभ होते हैं। जब उच्च शिक्षा की बात आती है, तो इन मूल्यों का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि विश्वविद्यालय केवल डिग्री बांटने वाली संस्थाएं नहीं होते, बल्कि वही स्थान होते हैं जहां समाज का भविष्य गढ़ा जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अधिसूचित 'प्रमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस रेगुलेशंस, 2026' इसी पृष्ठभूमि में सामने आए। उद्देश्य था उच्च शिक्षा संस्थानों में किसी भी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना और एक समावेशी वातावरण का निर्माण करना। लेकिन जैसे ही इन नियमों का अध्ययन किया गया, वैसे ही यह स्पष्ट होने लगा कि मंशा और क्रियान्वयन के बीच एक गहरी खाई मौजूद है। यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट को इन नियमों पर रोक लगानी पड़ी और देश भर में एक व्यापक बहस छिड़ गई। भारत का संविधान समानता के अधिकार को केवल एक आदर्श के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक सिद्धांत के रूप में देखता है। अनुच्छेद 14 कानून के समक्ष समानता और कानून के समान संरक्षण की बात करता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि राज्य कोई ऐसा कानून या नियम नहीं बना सकता, जो बिना तार्किक आधार के किसी वर्ग के साथ भेदभाव करे। अनुच्छेद 15(1) स्पष्ट रूप से धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान आदि के आधार पर भेदभाव पर रोक लगाता है। उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता का प्रश्न इसलिए भी संवेदनशील है, क्योंकि यहां विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आए छात्र-छात्राएं एक साथ पढ़ते हैं। यदि नियमों की भाषा या संरचना ही किसी एक समूह को संदेह के घेरे में खड़ा कर दे, तो वह समानता के संवैधानिक सिद्धांत के विपरीत हो जाती है। यूजीसी के नए समता नियमों के विरोध की सबसे बड़ी वजह उनकी प्रक्रियात्मक अस्पष्टता रही। किसी भी शिकायत प्रणाली की आत्मा उसकी प्रक्रिया होती है। यदि शिकायत दर्ज करने से लेकर उसके निपटारे तक के सभी चरण स्पष्ट, पारदर्शी और संतुलित न हों, तो वह प्रणाली न्याय देने के बजाय अविश्वास को जन्म देती है। इन नियमों में यह तो कहा गया कि भेदभाव की शिकायत मिलते ही एक समिति गठित की जाएगी और त्वरित कार्रवाई होगी, लेकिन यह नहीं बताया गया कि जांच कैसे होगी, साक्ष्य किस मानक पर स्वीकार किए जाएंगे, गवाहों को सुनने की प्रक्रिया क्या होगी और यदि आरोप गलत साबित होते हैं तो आरोपी की प्रतिष्ठा और अधिकारों की रक्षा कैसे की जाएगी।

न्यायशास्त्र का एक स्थापित सिद्धांत है कि 'न्याय न केवल होना चाहिए, बल्कि होता हुआ दिखना भी चाहिए'। यदि किसी शिक्षक या छात्र पर आरोप लगते ही प्रशासनिक कार्रवाई शुरू हो जाए और उसे अपना पक्ष रखने का पूरा अवसर न मिले, तो यह सिद्धांत टूट जाता है। यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार उचित प्रक्रिया के महत्व को रेखांकित किया है। जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार केवल शारीरिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें गरिमा, प्रतिष्ठा और निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार भी शामिल है। इन नियमों की एक और गंभीर समस्या उनकी आंतरिक असंगति रही। एक ओर वे वंचित समूहों के खिलाफ भेदभाव समाप्त करने की बात करते हैं, तो दूसरी ओर न्याय के अधिकार को कुछ विशिष्ट सामाजिक श्रेणियों तक सीमित कर देते हैं। इससे यह संदेश जाता है कि भेदभाव केवल एक दिशा में संभव है, जबकि वास्तविकता कहीं अधिक जटिल है। भेदभाव किसी भी व्यक्ति के साथ हो सकता है, चाहे वह किसी भी वर्ग या समुदाय से आता हो। यदि कानून इस जटिलता को स्वीकार नहीं करता, तो वह अधूरा रह जाता है। फरवरी 2025 में जब यूजीसी ने इन नियमों का मसौदा सार्वजनिक सुझावों के लिए जारी किया था, तब उसमें कुछ संतुलनकारी प्रावधान मौजूद थे। उस मसौदे में झूठी या दुर्भावनापूर्ण शिकायतों को हतोत्साहित करने की बात कही गई थी और यहां तक कि ऐसे मामलों में जुर्माने का भी प्रस्ताव था। यह प्रावधान इसलिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि किसी भी शिकायत प्रणाली में दुरुपयोग की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन अंतिम अधिसूचित नियमों में इन प्रावधानों को हटा दिया गया।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर में जमीन के नीचे रेल दौड़ाने की तैयारी चिकन नेक को मिलने वाली धमकियां होंगी बेअसर

> केंद्र सरकार ने अब सिलीगुड़ी गलियारे की सुरक्षा और मजबूती के लिए बड़ा कदम उठाया है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की है कि करीब चालीस कोस लंबे हिस्से में भूमिगत रेल पटरियां बिछाने की योजना बनाई गई है।

पूर्वोत्तर को देश के बाकी हिस्से से जोड़ने वाला सिलीगुड़ी गलियारा एक बार फिर राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में है। यह धरती की वही पतली पट्टी है जिसे आम बोलचाल में चिकन नेक कहा जाता है। सबसे संकरे हिस्से में इसकी चौड़ाई करीब पच्चीस कोस से भी कम मानी जाती है। इसके एक ओर नेपाल, दूसरी ओर भूटान और पास ही बांग्लादेश की सीमा है। यही रास्ता पूर्वोत्तर के आठों राज्यों के लिए जीवन रेखा है। सेना की आवाजाही हो, अनाज और ईंधन की आपूर्ति हो या व्यापार, सब कुछ काफी हद तक इसी राह से गुजरता है। केंद्र सरकार ने अब इस गलियारे की सुरक्षा और मजबूती के लिए बड़ा कदम उठाया है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की है कि करीब चालीस कोस लंबे हिस्से में भूमिगत रेल पटरियां बिछाने की योजना बनाई गई है। तीन मील हाट से रंगापानी के बीच यह भूमिगत मार्ग बनेगा। साथ ही पूरे मार्ग को चार पटरियों वाला बनाने का प्रस्ताव भी वार्षिक लेखा योजना में रखा गया है ताकि यातायात की क्षमता कई गुना बढ़ सके।

हम आपको बता दें कि हाल के समय में इस गलियारे को लेकर कई तरह की गीदड़ भभकियां सामने आईं थीं। बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद कुछ समूहों

ने चिकन नेक को दबाने जैसी बातें कही थीं। कुछ बयान ऐसे भी आये जिनमें इस इलाके को ग्रेटर बांग्लादेश की कल्पना से जोड़ा गया। ढाका की चीन से बढ़ती नजदीकी ने भी चिंता बढ़ाई। वर्ष 2017 में डोकलाम टकराव के समय भी सैन्य योजनाकारों ने सिलीगुडी हिस्से की कमजोरी पर ध्यान दिलाया था। साफ था कि यदि यहां बाधा आई तो पूर्वोत्तर लगभग कट सकता है। इसी पृष्ठभूमि में भूमिगत रेल को संकट के समय भी संपर्क बनाए रखने की योजना के रूप में देखा जा रहा है। भूमिगत मार्ग पर सीधा प्रहार करना कठिन होगा। इससे सैनिक साजो सामान और आम जन जीवन की आपूर्ति निरंतर बनी रह सकती है।

यदि चिकन नेक जैसे संवेदनशील इलाके में भूमिगत रेल मार्ग बनता है तो यह कौशल, साहस और दूरदर्शिता का भी प्रदर्शन होगा। भारत पहले ही जम्मू-कश्मीर में दुनिया के सबसे ऊंचे रेल पुल का निर्माण कर अपनी प्रतिभा दिखा चुका है। पहाड़ चीरकर और पहाड़ों के ऊपर पुल खड़ा करने वाले यही हाथ जमीन के भीतर भी सुरक्षित मार्ग बना सकते हैं। वैसे भी कठिन भौगोलिक हालात को मात देना भारतीय इंजीनियरों की पहचान बन चुकी है, इसलिए चिकन नेक में भूमिगत रेल केवल सुरक्षा कदम नहीं, बल्कि देश की तकनीकी ताकत और आत्मविश्वास का प्रतीक भी होगी।

देखा जाये तो यह गलियारा केवल भौगोलिक पट्टी नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता की धुरी है। इसलिए इसकी सुरक्षा पर किसी तरह की ढिलाई नहीं हो सकती। भूमिगत रेल, चार पटरी विस्तार और कड़ी निगरानी को उसी दिशा में उठे कदम के रूप में देखा जा रहा है। सामरिक दृष्टि से देखें तो यह इलाका चार देशों के बीच घिरा है। सीमा पार से होने वाली हर हलचल यहां असर डालती है। चीन की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा, बांग्लादेश की अंदरूनी राजनीति, और खुले सीमा प्रबंध वाले इलाकों की जटिलता, सब मिलकर इस पट्टी को संवेदनशील बनाते हैं। ऐसे में भूमिगत रेल केवल ईंट पत्थर का काम नहीं, बल्कि संकट काल में जीवन रेखा को जिंदा रखने का उपाय है। युद्ध या बड़े तनाव की स्थिति में खुली पटरियां आसान निशाना बन सकती हैं, पर जमीन के भीतर चलने वाली रेल को रोकना कठिन होगा।

इसका आर्थिक पक्ष भी कम अहम नहीं है। पूर्वोत्तर क्षेत्र प्राकृतिक संसाधन, जल शक्ति, कृषि उपज और सीमा पार व्यापार की अपार संभावना रखता है। यदि संपर्क मजबूत होगा तो उद्योग, पर्यटन और व्यापार को बल मिलेगा। चार पटरी मार्ग का अर्थ है तेज आवागमन, कम बाधा और ज्यादा माल ढुलाई। इससे लागत घटेगी और बाजार बढ़ेंगे, जो इलाका कभी दूर माना जाता था वह अवसर का द्वार बन सकता है।

सरोकार

स्वर्ग–नरक का रहस्य: जीवन की राह पर बिखरे अनुभव

मनुष्य जब भी स्वर्ग और नरक की बात करता है, तो उसकी कल्पना किसी रहस्यमयी लोक में चली जाती है। उसे लगता है कि यह सब मृत्यु के बाद तय होगा, किसी अदृश्य सत्ता के दरबार में, जहाँ उसके कर्मों का हिसाब लगाया जाएगा। लेकिन सूफ़ी परंपरा इस धारणा को बहुत ही मानवीय और सरल ढंग से चुनौती देती है। सूफ़ी संतों का मानना है कि स्वर्ग और नरक कोई दूर की जगहें नहीं हैं, बल्कि वे मनुष्य के जीवन के अनुभव हैं, जो वह इसी धरती पर, अपने कर्मों और अपने स्वभाव से रचता है।

एक बार कुछ जिज्ञासु लोग एक सूफ़ी संत के पास पहुँचे और उनसे पूछा कि जन्नत और दोज़ख़ वास्तव में क्या हैं। संत ने न कोई उपदेश दिया, न ही किसी धर्मग्रंथ का हवाला। उन्होंने बस इतना कहा कि अगले दिन उनके साथ चलना, उत्तर अपने आप मिल जाएगा। यह तरीका सूफ़ियों का खास होता है—वे शब्दों से कम और अनुभव से अधिक सिखाते हैं।

अगले दिन संत उन लोगों को लेकर सबसे पहले एक शिकारी के पास पहुँचे। वह शिकारी जंगल में जानवरों का शिकार करता था और उसे अपना पेशा मानता था। उसके आसपास मरे हुए जानवर, खून और हिंसा का माहौल था। सूफ़ी संत ने उस दृश्य की ओर इशारा करते हुए कहा कि यही दोज़ख़ है। जो व्यक्ति जीवन भर निर्दयता और क्रूरता से जीता है, वह चाहे बाहर से कितना भी निडर या शक्तिशाली क्यों न लगे, भीतर से वह हमेशा अशांत रहता है। उसका मन करुणा से खाली होता है, और यही खालीपन उसे भीतर ही भीतर जलाता रहता है। यह कहानी केवल उस शिकारी तक सीमित नहीं है। आज की दुनिया में शिकार के रूप बदल गए हैं। अब लोग जंगल में जानवरों का नहीं, बल्कि समाज में इंसानों का शिकार करते हैं। कोई धोखे से किसी का हक छीन लेता है, कोई सत्ता के बल पर कमजोरों को कुचल देता है, कोई लालच में रिश्तों तक को गिरवी रख देता है। ऐसे लोग अक्सर बाहर से सफल दिखाई देते हैं, लेकिन उनके भीतर डर, बेचैनी और असंतोष का तूफ़ान चलता रहता है। यही मानसिक यातना उनका नरक बन जाती है।

इसके बाद सूफ़ी संत उन लोगों को जंगल में रहने वाले एक फ़क़ीर के पास ले गए। वह फ़क़ीर एक छोटी सी कुटिया में रहता था। उसके पास न धन था, न सुविधाएँ, लेकिन उसके चेहरे पर असीम शांति थी। वह प्रकृति के साथ सामंजस्य में जीवन जी रहा था। सूफ़ी संत ने कहा कि इस व्यक्ति ने आने वाले सुख के लिए आज के लालच का त्याग किया है। इसने इच्छाओं को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया, बल्कि उन्हें समझकर सीमित कर लिया। इसलिए इसके लिए जन्नत निश्चित है।

यह जन्नत किसी ऐश-ओ-आराम से भरी कल्पनालोक नहीं है, बल्कि मन की वह अवस्था है जहाँ संतोष है। फ़क़ीर का जीवन यह सिखाता है कि असली खुशी पाने की चीज़ नहीं, बल्कि समझने की चीज़ है। जब इंसान यह जान लेता है कि सुख बाहर नहीं, भीतर है, तो उसकी दुनिया बदल जाती है। कम साधनों में भी उसका जीवन पूर्ण लगने लगता है।

लेकिन सूफ़ी संत की यात्रा यहीं समाप्त नहीं हुई। तीसरी जगह वे एक साधारण गृहस्थ के घर पहुँचे। वह व्यक्ति न तो शिकारी था और न ही फ़क़ीर। वह अपने परिवार के साथ रहता था, मेहनत करता था, ईमानदारी से कमाता था और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ निभाता था। उसके घर में प्रेम था, आपसी सम्मान था और दूसरों की मदद करने की भावना थी। वहाँ न कोई दिखावा था और न ही अभाव का रोना। सूफ़ी संत ने कहा कि ऐसे लोगों के लिए इस दुनिया में भी जन्नत है और उस दुनिया में भी जन्नत। यह बात सूफ़ी दर्शन का सार है। यह बताती है कि अध्यात्म का अर्थ संसार से भागना नहीं है। न ही इसका अर्थ केवल त्याग और तपस्या में डूब जाना है। सच्चा अध्यात्म उस संतुलन में है, जहाँ इंसान अपने कर्तव्यों को निभाते हुए भी अपने भीतर की मानवता को जीवित रखता है। जब जीवन में संतुलन होता है, तब साधारण सा घर भी स्वर्ग बन जाता है।

सूफ़ी संतों का मानना है कि स्वर्ग और नरक कोई स्थायी स्थान नहीं, बल्कि चलती-फिरती अवस्थाएँ हैं। हर सुबह इंसान के पास यह चुनाव होता है कि वह किस दिशा में जाएगा। अगर वह क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार और लालच को चुनता है, तो उसका दिन नरक बन जाता है। अगर वह प्रेम, करुणा, क्षमा और संतोष को चुनता है, तो वही दिन स्वर्ग में बदल जाता है।

आज की आधुनिक दुनिया में यह संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। भागदौड़ भरी जिंदगी, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और अनिश्चित भविष्य ने इंसान को भीतर से बेचैन कर दिया है। लोग हर समय कुछ न कुछ पाने की चिंता में घिरे रहते हैं। उनके पास सब कुछ होते हुए भी सुकून नहीं होता। यह स्थिति आधुनिक नरक का रूप है, जहाँ इंसान स्वयं से ही दूर हो जाता है।

इसके विपरीत, जो लोग सीमित साधनों में भी संतोष और सेवा का जीवन जीते हैं, वे कठिन समय में भी संतुलन बनाए रखते हैं। वे जानते हैं कि जीवन केवल लेने का नाम नहीं, देने का भी नाम है। जब इंसान किसी और के दुख को कम करने की कोशिश करता है, तो वही क्षण उसके लिए स्वर्ग बन जाता है। सूफ़ी संत की यह कथा हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है। वह हमें यह समझने का अवसर देती है कि स्वर्ग और नरक का निर्णय कोई बाहर की शक्ति नहीं करती, बल्कि हम स्वयं अपने कर्मों से करते हैं।

भारत के भविष्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है इस वर्ष का बजट

दिनांक 1 फरवरी 2026 को, रविवार के दिन, भारत की वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने भारतीय संसद में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए बजट पेश किया। इस बजट में की गई घोषणाओं के माध्यम से वैश्विक स्तर पर घटित हो रही उथल पुथल से भारत को बचाने की पुरजोर कोशिश की गई दिखती है। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा अपने द्वितीय कार्यकाल में वर्ष 2025 के दौरान पूरे वर्षभर लगातार कई देशों के अमेरिका को होने वाले निर्यात पर टैरिफ की घोषणाएं की जाती रहीं एवं इसके विरोध स्वरूप कुछ देशों ने अमरीका से इन देशों को होने वाले निर्यात पर प्रतिकारी टैरिफ लगाने की घोषणाएं की जाती रहीं। चीन ने तो प्रतिशोध में अमेरिका को दुर्लभ खनिज पदार्थों की आपूर्ति ही रोक दी थी। हालांकि इसके पूर्व अमेरिका ने भी चीन को सेमीकंडक्टर एवं चिप्स की आपूर्ति को प्रभावित करने का प्रयास किया था। कुल मिलाकर, कुछ देश तो आपस में विभिन्न वस्तुओं के आयात एवं निर्यात को रोकने के प्रयत्न करते रहे। इन सभी घोषणाओं से वैश्विक स्तर पर विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में माहौल विपरीत रूप से प्रभावित होता रहा। ट्रम्प प्रशासन ने भारत से अमेरिका को होने वाले विभिन्न वस्तुओं के निर्यात पर भी 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है, जो अमेरिका द्वारा विभिन्न देशों से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर लगाए गए टैरिफ में संभवतः आज अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक है। इस वित्तीय वर्ष के बजट में तीन कर्तव्यों को ध्यान में रखा गया है। (1) विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करते हुए भारत की आर्थिक विकास दर को और अधिक तेज किया जाय ताकि भारत को वैश्विक स्तर पर चल रही उथल पुथल से बचाया जा सके; (2) भारतीय युवाओं में कौशल का विकास करना ताकि तकनीकी क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों के लिए वे अपने आप को तैयार कर सकें; (3) देश में समावेशी विकास हो सके एवं भारत के संसाधनों का उपयोग समस्त नागरिकों की भलाई में किया जा सके और कोई भी नागरिक, नगर एवं राज्य आर्थिक विकास की धारा से बाहर नहीं रहे। वैश्विक स्तर पर उक्त वर्णित परिस्थितियों के बीच भी भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनी रही। परंतु, भारत की विकास दर की इस गति को आगामी वर्षों में भी बनाए रखने के उद्देश्य से वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट में कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई है। भारत आज दुर्लभ खनिज पदार्थों तथा सेमीकंडक्टर एवं चिप्स का भारी मात्रा आयात करता है। चिप्स को तो आज के उत्पादों के निर्माण में तेल की भूमिका के रूप में देखा जा रहा है। इन दोनों पदार्थों पर चीन एवं अमेरिका का लगभग पूर्णतः एकाधिकार है। भारत अपने आप को इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाना चाहता है, इस दृष्टि से बजट में भारत में ही दुर्लभ खनिज पदार्थों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए ओड़िसा, केरल, तमिलनाडु एवं आन्ध्रप्रदेश स्थित खदानों में से कच्चे माल को निकालकर इसे संसाधित करते हुए भारत में ही दुर्लभ खनिज पदार्थों के निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बजट में उक्त चारों राज्यों में एक कोरिडोर बनाने की घोषणा की गई है। इसी प्रकार, भारत में ही सेमीकंडक्टर एवं चिप्स के निर्माण हेतु विनिर्माण इकाईयों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए बजट में कई उपायों की घोषणा की गई है एवं इस हेतु 40,000 करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान भी किया गया है। साथ ही, इसके लिए बजट में सेमीकंडकर मिशन 2.0 को लागू करने की भी घोषणा की गई है। इससे कम्पनियों को भारत में इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में विनिर्माण इकाईयों को स्थापित करने का प्रोत्साहन मिलेगा।

हाल ही में भारत ने कई देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते सम्पन्न किए हैं, इन समझौतों में 27 विकसित देशों के समूह, यूरोपीयन यूनियन से किया गया मुक्त व्यापार समझौता भी शामिल है। इसे "मदर आफ ऑल डील्स" कहा जा रहा है क्योंकि यह समझौता 28 देशों (27+1) के बीच एक साथ किया गया सबसे बड़ा समझौता है। इन मुक्त व्यापार समझौतों से भारत में वस्त्र एवं परिधान उद्योग, समुद्रीय पदार्थ उद्योग, चमड़ा उद्योग, खिलौना उद्योग एवं जेम्स एवं ज्वेलरी उद्योग, आदि को सबसे अधिक लाभ होने जा रहा है। इन उद्योगों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रम भारी मात्रा में कार्यरत हैं। भारत में उक्त वर्णित पदार्थों के निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बजट में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग को रियायतें देने का प्रयास किया गया है ताकि उक्त वर्णित उत्पादों की मांग में होने वाली वृद्धि को पूर्ण किया जा सके।

नजरिया

वात्सल्य का बंधन: जब अनंत ने स्वयं को माँ की गोद में समर्पित किया

उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती

भारतीय सनातन परंपरा में माँ और पुत्र के रिश्ते को केवल जैविक संबंध के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि इसे ईश्वर और भक्त के बीच के सबसे मधुर, सबसे आत्मीय और सबसे रहस्यमय भाव के रूप में स्वीकार किया गया है। इसी भाव का सर्वोच्च, दिव्य और अद्वितीय स्वरूप हमें माता यशोदा और भगवान श्रीकृष्ण के संबंध में दिखाई देता है। यह ऐसा संबंध है जहाँ सृष्टि का संचालन करने वाला परब्रह्म, अनंत कोटि ब्रह्माण्डों का स्वामी, स्वयं एक साधारण ग्वालिन की गोद में बालक बनकर लोटता है, रोता है, हँसता है और दंड भी स्वीकार करता है। यह लीला केवल कथा नहीं, बल्कि भक्ति-दर्शन का वह शिखर है जहाँ ईश्वर अपनी सर्वशक्तिमत्ता को त्यागकर प्रेम के अधीन हो जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म माता देवकी के गर्भ से हुआ, यह ऐतिहासिक और पौराणिक सत्य है, किंतु मातृत्व का रस, वात्सल्य का अमृत और बालकृष्ण की हर शरारत को अपने आँचल में समेटने का सौभाग्य माता यशोदा को ही प्राप्त हुआ। सनातन चिंतन में यह बात बार-बार दोहराई गई है कि जन्म देना और माँ होना एक बात नहीं है। माँ वह होती है जो अपने अस्तित्व को बच्चे के अस्तित्व में विलीन कर दे। माता यशोदा ने यही किया। उन्होंने न कभी यह जाना कि उनका पुत्र स्वयं भगवान है, न ही जानने की इच्छा की। उनका प्रेम निष्काम था, निस्वार्थ था और इसलिए सर्वश्रेष्ठ था।

सूफ़ी परंपरा हो या भक्ति आंदोलन, सभी में यही सत्य उभरकर आता है कि जहाँ प्रेम होता है, वहाँ ज्ञान स्वयं झुक जाता है। माता यशोदा के जीवन में यह सिद्धांत पूर्ण रूप से साकार होता है। वे जानती थीं कि उनका लल्ला माखन चुराता है, ग्वालों के घरों में उत्पात मचाता है, परंतु उनके लिए वह केवल उनका बच्चा था। जब बालकृष्ण मिट्टी खा लेते हैं, तो यशोदा डर जाती हैं। जब वे उनकी शरारतों से तंग आती हैं, तो उन्हें बाँध देती हैं। यही वह क्षण है जहाँ दर्शन जन्म लेता है—अनंत सीमित हो जाता है, सर्वशक्तिमान बंधन स्वीकार कर लेता है। दामोदर लीला केवल एक कथा नहीं, बल्कि भक्ति का महाग्रंथ है। जब माता यशोदा कृष्ण को ओखल से बाँधती हैं, तब रस्सी हर बार दो अंगुल छोटी पड़ जाती है। यह दो अंगुल क्या हैं? आचार्यों ने कहा है—एक अंगुल भगवान की कृपा और एक अंगुल भक्त का प्रयास। जब तक दोनों का संयोग नहीं होता, तब तक ईश्वर बंधता नहीं। अंततः जब माता यशोदा का प्रेम चरम पर पहुँच जाता है, जब उनके माथे पर पसीना छलक आता है और हृदय करुणा से भर उठता है, तब भगवान स्वयं बंध जाते हैं। यह दृश्य बताता है कि ईश्वर को शक्ति से नहीं, केवल प्रेम से बाँधा जा सकता है। यशोदा जी का मातृत्व केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधना भी है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, पूर्व जन्म में यशोदा 'धरा' थीं और नंद बाबा 'वसुश्रेष्ठ द्रोण'। दोनों ने कठोर तपस्या की थी। उनका वरदान कोई राजपाट नहीं था, कोई मोक्ष नहीं था। उन्होंने बस यही माँगा कि पृथ्वी पर जन्म लेने पर भगवान श्रीकृष्ण में उनकी अविचल भक्ति बनी रहे। यह दर्शाता है कि उनका लक्ष्य ईश्वर को पाना नहीं, बल्कि ईश्वर से प्रेम करना था। यही कारण है कि उन्हें देवकी जैसा गर्भ-सुख नहीं, बल्कि यशोदा जैसा वात्सल्य-सुख मिला। एक अन्य कथा में बताया गया है कि माता यशोदा ने स्वयं भगवान विष्णु को पुत्र रूप में पाने के लिए तपस्या की थी। भगवान ने उन्हें वर दिया कि वे देवकी के गर्भ से जन्म लेंगे, लेकिन मातृत्व का सुख यशोदा को ही देंगे। यह वरदान अपने आप में अद्भुत है। इसका अर्थ है कि ईश्वर स्वयं तय करते हैं कि उन्हें किस रूप में किस भक्त के अधीन होना है। यशोदा का प्रेम इतना निष्कपट था कि भगवान ने स्वयं को उनके चरणों में समर्पित कर दिया। भागवत पुराण में माता यशोदा का वर्णन केवल एक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक रस के रूप में किया गया है—वात्सल्य रस। भक्तिरस के नौ प्रकारों में वात्सल्य को अत्यंत दुर्लभ माना गया है, क्योंकि इसमें भक्त स्वयं को श्रेष्ठ नहीं, बल्कि रक्षक और पालनकर्ता मानता है। यशोदा जी को कभी यह भाव नहीं आया कि "मेरा पुत्र भगवान है।" यदि ऐसा होता, तो वात्सल्य टूट जाता।

मालिक जयेश जग्शी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी है, न्याय क्षेत्र मुंबई) कार्यकारी संपादकः अरविंद मिश्रा, सहसंपादकः सुजीत मिश्रा (दै.'राष्ट्रीय स्वाभिमान 'में सभी लोग सहयोगात्मक और अवैतनिक तौर पर कार्यरत हैं)
● आर.एन.आई.:MAHHIN/2008/24084 ● ईमेलः rastriyaswabhiman@gmail.com ● भ्रमणध्वनि क्र. +919224733113

दसवें फाइनल की दहलीज पर भारतीय युवा जोश सेमीफाइनल में अफगानिस्तान से होगी निर्णायक जंग

हरारे में खेले जा रहे अंडर-19 वनडे विश्व कप में भारतीय युवा ब्रिगेड एक बार फिर इतिहास रचने के बेहद करीब खड़ी है। दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे की सह-मेजबानी में चल रहे इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में आयुष म्हात्रे की कप्तानी वाली टीम इंडिया ने अब तक अपने शानदार प्रदर्शन से सभी को प्रभावित किया है। बुधवार को होने वाले सेमीफाइनल मुकाबले में भारत का सामना अफगानिस्तान से होगा, जहां टीम की निगाह लगातार छठी बार और कुल दसवीं बार फाइनल में जगह बनाने पर टिकी है। पांच बार की विश्व चैंपियन भारतीय टीम इस विश्व कप में अब तक अजेय रही है और हर मुकाबले में उसने अपनी गहराई, संतुलन और आत्मविश्वास का परिचय दिया है।

आंकड़े भी भारतीय टीम के पक्ष में मजबूती से खड़े नजर आते हैं। अंडर-19 स्तर पर भारत और अफगानिस्तान के बीच अब तक 12 मुकाबले खेले गए हैं, जिनमें से 10 में भारत ने जीत दर्ज की है, जबकि अफगानिस्तान को सिर्फ दो बार सफलता मिली है। खास बात यह है कि भारतीय टीम पिछले सात वर्षों से अफगानिस्तान के खिलाफ अपराजेय है और उसकी आखिरी हार 2019 में देखने को मिली थी। हालिया फॉर्म की बात करें तो पिछले पांच मुकाबलों में भारत ने चार में जीत हासिल की है और सिर्फ एक बार अफगानिस्तान से शिकस्त झेली है। ऐसे में सेमीफाइनल से पहले आंकड़े और मनोबल दोनों ही भारत के पक्ष में दिखाई देते हैं।

भारतीय टीम की बल्लेबाजी इस टूर्नामेंट में उसकी सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरी है। विकेटकीपर बल्लेबाज अभिज्ञान कुंडू ने मध्यक्रम में जिस तरह से जिम्मेदारी संभाली है, उसने टीम को मुश्किल हालात से बार-बार उबारा है। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने अब तक पांच मैचों में 199 रन बनाए हैं और उनका संयमित लेकिन प्रभावी खेल भारतीय पारी की रीढ़ साबित हुआ है। ओपनिंग में वैभव सूर्यवंशी का आक्रामक अंदाज विपक्षी गेंदबाजों के लिए सिरदर्द बना हुआ है। वह शुरुआत में ही रन गति को तेज कर देते हैं, जिससे भारत अक्सर मैच पर शुरुआती पकड़ बना लेता है। टीम प्रबंधन को उम्मीद है कि सेमीफाइनल जैसे बड़े मुकाबले में वैभव अपनी तेज शुरुआत को बड़ी पारी में बदलेंगे। इसके अलावा जिम्बाब्वे के खिलाफ शतक जड़ने वाले ऑलराउंडर विहान मल्होत्रा भी टीम के लिए अहम कड़ी हैं, जिनसे बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में योगदान की उम्मीद रहेगी।

गेंदबाजी विभाग में भी भारतीय टीम संतुलित और धारदार नजर आ रही है। कप्तान आयुष म्हात्रे ने न सिर्फ नेतृत्व में परिपक्वता दिखाई है, बल्कि अपनी ऑफ-ब्रेक गेंदबाजी से छह विकेट झटककर विपक्षी टीमों की कमर तोड़ी है। हालांकि कप्तान का बल्ला अब तक शांत रहा है, लेकिन बड़े मुकाबले से पहले उनसे एक उपयोगी पारी की भी उम्मीद की जा रही है। तेज गेंदबाजी की जिम्मेदारी हेनिल पटेल और आरएस अंबरीश के कंधों पर होगी, जिन्होंने लगातार सही लाइन-लेंथ से दबाव बनाया है। स्पिन विभाग में खिलन पटेल ने बीच के ओवरों में रन गति पर लगाम कसने का काम बखूबी किया है। टीम के लिए एकमात्र चिंता का विषय आरोन जॉर्ज की फॉर्म है, जो अब तक उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सके हैं, लेकिन सेमीफाइनल जैसे मैच में उनके पास खुद को साबित करने का सुनहरा मौका होगा।

अफगानिस्तान की टीम को भी हल्के में लेना भारतीय खेमे की सबसे बड़ी भूल हो सकती है। इस विश्व कप में अफगानिस्तान ने पांच में से चार मुकाबले जीतकर अपनी ताकत का अहसास कराया है। खासतौर पर सुपर सिक्स में पाकिस्तान के खिलाफ 58 रन की शानदार जीत ने उनके आत्मविश्वास को नई ऊंचाई दी है। अफगान टीम के खिलाड़ी दबाव में आक्रामक क्रिकेट खेलने के लिए जाने जाते हैं और यही बात इस सेमीफाइनल को रोमांचक बना देती है।

रैंकिंग की बिसात पर नया संतुलनः जोकोविच की वापसी अल्काराज की बादशाहत और सबालेंका का दबदबा

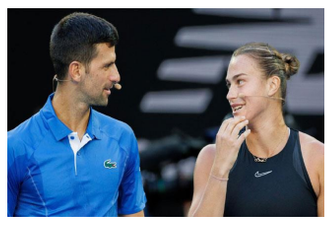

मेलबर्न से आई ताजा विश्व टेनिस रैंकिंग ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि शीर्ष स्तर का टेनिस सिर्फ जीत और हार का खेल नहीं, बल्कि निरंतरता, मानसिक मजबूती और सही समय पर प्रदर्शन का इम्तिहान भी है। ऑस्ट्रेलियन ओपन के रोमांचक मुकाबलों के बाद पुरुष और महिला दोनों वर्गों में रैंकिंग की तस्वीर बदली है, लेकिन इस बदलाव में भी कुछ नाम ऐसे हैं जिन्होंने अपनी मौजूदगी से यह जता दिया कि वे अभी खेल के केंद्र में ही हैं। 24 बार के ग्रैंड स्लैम एकल चैंपियन नोवाक जोकोविच के लिए यह टूर्नामेंट खिताब के लिहाज से भले ही अधूरा रहा हो, लेकिन रैंकिंग के लिहाज से यह उनके लिए एक अहम मोड़ बनकर आया है। फाइनल में कार्लोस अल्काराज से हार झेलने के बावजूद जोकोविच नवीनतम विश्व रैंकिंग में तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। यह उपलब्धि इसलिए भी खास है क्योंकि अगस्त 2024 के बाद पहली बार 38 वर्षीय जोकोविच एक बार फिर शीर्ष तीन खिलाड़ियों में शामिल हुए हैं। सेमीफाइनल में यानिक सिनेर को हराकर उन्होंने यह साफ कर दिया कि उम्र सिर्फ एक आंकड़ा है और बड़े मैचों में उनका अनुभव आज भी निर्णायक साबित होता है।

दूसरी ओर, कार्लोस अल्काराज ने ऑस्ट्रेलियन ओपन के खिताबी मुकाबले में शानदार प्रदर्शन कर न सिर्फ ट्रॉफी अपने नाम की, बल्कि विश्व नंबर एक की कुर्सी पर भी अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखी। अल्काराज ने दूसरे नंबर पर काबिज यानिक सिनेर को पीछे छोड़ते हुए यह दिखा दिया कि मौजूदा दौर में वह सिर्फ भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान के भी सबसे बड़े सितारों में से एक हैं। उनकी आक्रामकता, फिटनेस और बड़े मौकों पर शांत दिमाग उन्हें बाकी खिलाड़ियों से अलग पहचान देती है। अल्काराज और जोकोविच के बीच फाइनल मुकाबला दरअसल पीढ़ियों के टकराव जैसा था, जिसमें युवा जोश और अनुभव की जंग देखने को मिली। यानिक सिनेर के लिए यह टूर्नामेंट मिश्रित अनुभव लेकर आया। हालांकि वह सेमीफाइनल में जोकोविच से हार गए, लेकिन रैंकिंग में वह अब भी शीर्ष दो में बने हुए हैं। यह उनके लगातार अच्छे प्रदर्शन का नतीजा है, जो यह संकेत देता है कि आने वाले समय में पुरुष टेनिस में अल्काराज, सिनेर और जोकोविच के बीच दिलचस्प प्रतिस्पर्धा बनी रहने वाली है।

महिला टेनिस में भी रैंकिंग का समीकरण कम दिलचस्प नहीं रहा। आर्यना सबालेंका ने ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल में एलिना रायबाकिना से हार जरूर झेली, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपनी शीर्ष रैंकिंग बरकरार रखी है।

टेस्ट क्रिकेट की पूरी तैयारी ने बदली कमिंस की राह, विश्व कप से बाहर होने के फैसले पर खुद किया खुलासा

मेलबर्न में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट के सबसे भरोसेमंद तेज गेंदबाज और टीम के मौजूदा टेस्ट व वनडे कप्तान पैट कमिंस ने टी-20 विश्व कप से बाहर होने को लेकर अपनी चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा है कि यह फैसला केवल चोट की वजह से नहीं, बल्कि आने वाले टेस्ट सत्र में सभी मुकाबले खेलने की उनकी मजबूत इच्छा से भी जुड़ा हुआ है। कमिंस के मुताबिक, वह किसी भी हाल में अपनी फिटनेस से समझौता नहीं करना चाहते थे, क्योंकि टेस्ट क्रिकेट उनके लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है। पैट कमिंस पीठ की चोट से पूरी तरह उबर नहीं पाए थे, जिसके चलते उन्हें टी-20 विश्व कप से बाहर होना पड़ा। उन्होंने इसे अपने करियर का दुर्भाग्यपूर्ण पल बताया, लेकिन साथ ही यह भी स्वीकार किया कि दीर्घकालिक सोच के तहत यह फैसला लेना जरूरी था। कमिंस ने कहा कि वह खुद को काफी बेहतर महसूस कर रहे थे और शुरुआत में चोट गंभीर नहीं लग रही थी। उन्हें लगा था कि कुछ ही हफ्तों में वह पूरी तरह फिट होकर मैदान पर लौट आएंगे, लेकिन हालिया मेडिकल स्कैन ने तस्वीर को थोड़ा बदल दिया। कमिंस के अनुसार, एडिलेड टेस्ट के बाद ही मेडिकल टीम को अंदाजा हो गया था कि इस चोट को पूरी तरह ठीक होने में चार से आठ सप्ताह तक का समय लग सकता है। शुरुआती आकलन में उम्मीद जताई गई थी कि चार सप्ताह में ही वह पूरी तरह फिट हो जाएंगे, क्योंकि उस दौरान उन्हें किसी तरह की बड़ी परेशानी महसूस नहीं हो रही थी। हालांकि, जब दोबारा स्कैन कराया गया तो डॉक्टरों ने स्पष्ट किया कि चोट को पूरी तरह भरने में अभी कुछ और समय लगेगा। ऐसे में विश्व कप से पहले फिटनेस हासिल कर पाना मुश्किल हो गया। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान ने कहा कि अगर वह जल्दबाजी में वापसी करते, तो चोट के फिर से उभरने का खतरा बना रहता, जो पूरे टेस्ट सत्र को प्रभावित कर सकता था। उनका मानना है कि टी-20 विश्व कप भले ही एक बड़ा टूर्नामेंट हो, लेकिन आने वाला टेस्ट कैलेंडर उतना ही महत्वपूर्ण है, जहां टीम को उनकी जरूरत लंबे समय तक पड़ेगी। इसी सोच के चलते उन्होंने जोखिम लेने के बजाय आराम को तरजीह दी। कमिंस ने यह भी बताया कि अब वह कुछ हफ्तों तक पूरी तरह आराम करेंगे और उसके बाद धीरे-धीरे वापसी की योजना बनाएंगे। उनका लक्ष्य साफ है—पूरी तरह फिट होकर टेस्ट क्रिकेट में लौटना और सभी मैच खेलना। उन्होंने कहा कि वह इस बात से संतुष्ट हैं कि उन्होंने शरीर की बात सुनी और जल्दबाजी नहीं की, क्योंकि लंबे करियर में ऐसे फैसले बेहद अहम होते हैं।

नई पहचान, नई चुनौती: विश्व कप में विदेशी जर्सी पहनकर भारतीय जड़ों के खिलाड़ी रचेंगे अपनी कहानी

विश्व कप की उलटी गिनती जैसे-जैसे तेज हो रही है, वैसे-वैसे क्रिकेट का रंग और गहरा होता जा रहा है। यह टूर्नामेंट सिर्फ ट्रॉफी जीतने की जंग नहीं है, बल्कि उन सैकड़ों सपनों का मंच भी है, जो अलग-अलग देशों की सीमाओं को पार करते हुए क्रिकेट के मैदान तक पहुंचे हैं। इस बार का विश्व कप एक खास वजह से भी अलग है, क्योंकि इसमें खेल रही 20 टीमों में से नौ टीमों की जर्सी में भारतीय मूल के खिलाड़ी नजर आएंगे। करीब 40 ऐसे क्रिकेटर होंगे जिनकी जड़ें भारत की मिट्टी में हैं, लेकिन पहचान किसी और देश की टीम के साथ बनी है। अपने ही देश में, अपनी ही पिचों पर, परिचित माहौल में ये खिलाड़ी अब भारत के खिलाफ या भारत की मौजूदगी में खुद को साबित करने उतरेंगे, और यही इस विश्व कप की सबसे भावनात्मक और दिलचस्प तस्वीर है। जब भारतीय टीम सात फरवरी को अमेरिका के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी, तब मैदान पर एक अजीब सा दृश्य होगा। सामने खड़ी अमेरिकी टीम में भी आधे से ज्यादा खिलाड़ी ऐसे होंगे जिनकी क्रिकेट की पहली यादें भारत की गलियों, मैदानों और अकादमियों से जुड़ी रही हैं। इन्हीं में एक नाम सौरभ नेत्रवलकर का है, जिनकी कहानी किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं लगती। मुंबई में जन्मे सौरभ ने 2010 के अंडर-19 विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व किया था और उस टीम में उनके साथी केएल राहुल और मयंक अग्रवाल जैसे खिलाड़ी थे। उसी टूर्नामेंट में उन्होंने नौ विकेट लेकर भारत के लिए सबसे सफल गेंदबाज बनने का गौरव हासिल किया था। बाद में उन्होंने सूर्यकुमार यादव के साथ मुंबई के लिए भी क्रिकेट खेला। अब वही सौरभ, अमेरिकी जर्सी पहनकर, उसी सूर्यकुमार के खिलाफ वानखेड़े स्टेडियम में गेंद थामे नजर आएंगे। सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम करने वाले 34 वर्षीय नेत्रवलकर के लिए यह मुकाबला सिर्फ एक मैच नहीं, बल्कि अपनी पूरी यात्रा को एक बार फिर जीने जैसा होगा।

अमेरिका की टीम की कमान संभाल रहे मोनांक पटेल की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। आनंद में जन्मे मोनांक गुजरात की अंडर-19 टीम में जसप्रीत बुमराह के साथ खेले हैं। लाल गेंद हो या सफेद गेंद, दोनों ने साथ-साथ क्रिकेट के शुरुआती सपने देखे थे। आज बुमराह भारतीय टीम के सबसे बड़े सितारों में से एक हैं और मोनांक अमेरिका की कप्तानी कर रहे हैं। मैदान पर जब दोनों आमने-सामने होंगे, तो वह सिर्फ दो खिलाड़ी नहीं होंगे, बल्कि बचपन की दोस्ती, साझा संघर्ष और अलग-अलग रास्तों की कहानी भी होगी। मोनांक के लिए यह पल भावनाओं से भरा होगा, क्योंकि वह उस दोस्त के खिलाफ खेलेंगे, जिसके साथ कभी उन्होंने भारतीय जर्सी पहनने का सपना देखा था।

यूरोप में भी भारतीय जड़ों की क्रिकेट कहानी कम दिलचस्प नहीं है। फगवाड़ा में जन्मे जसप्रीत सिंह अब इटली की ओर से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलते हैं। 2006 में परिवार के साथ मिलान जाने वाले जसप्रीत ने शायद कभी नहीं सोचा होगा कि एक दिन वह आईसीसी टूर्नामेंट में उतरेंगे। 2019 में अंतरराष्ट्रीय पदार्पण करने वाले इस तेज गेंदबाज ने जिंदगी के कई रंग देखे हैं।

रणवीर सिंह की आंखों में बदले की आग, 'धुरंधर: द रिवेंज' के टीजर ने बढ़ाया सिनेमाई तापमान

सिनेमाघरों में जब किसी फिल्म का नाम आते ही दर्शकों की धड़कन तेज हो जाए, तो समझ लेना चाहिए कि कहानी कहीं न कहीं लोगों के दिलों में अपनी जगह बना चुकी है। आदित्य धर के निर्देशन में बनी फिल्म 'धुरंधर' ने जब रिलीज के वक्त दुनिया भर में शानदार सफलता हासिल की थी, तभी यह तय हो गया था कि इस कहानी का सफर यहीं खत्म नहीं होने वाला। अब उसी कहानी को एक नए मोड़, नए तेवर और कहीं ज्यादा आक्रामक अंदाज में आगे बढ़ाने आ रही है 'धुरंधरः द रिवेंज', जिसका दमदार टीजर रिलीज होते ही सोशल मीडिया और फिल्मी गलियारों में हलचल मच गई है। करीब 1 मिनट 12 सेकंड का यह टीजर किसी बड़े खुलासे की जगह माहौल बनाने पर फोकस करता नजर आता है। शुरुआत ही रणवीर सिंह के इंटेंस और उग्र लुक से होती है, जो साफ इशारा करता है कि इस बार उनका किरदार पहले से कहीं ज्यादा गहराई और आक्रोश से भरा हुआ है। आंखों में बदले की आग, चेहरे पर सख्ती और बॉडी लैंग्वेज में ठहराव—सब कुछ यह बताने के लिए काफी है कि 'धुरंधरः द रिवेंज' सिर्फ एक सीक्वल नहीं, बल्कि पहले हिस्से से कहीं ज्यादा खतरनाक और भावनात्मक सफर होने वाला है। टीजर में कहानी को लेकर ज्यादा पत्ते नहीं खोले गए हैं। मेकर्स ने जानबूझकर रहस्य को बरकरार रखा है और पहली फिल्म के कुछ असरदार दृश्यों की झलक दिखाकर दर्शकों की यादों को ताजा किया है। बैकग्राउंड म्यूजिक के साथ उभरते ये सीन एक ऐसे संघर्ष की ओर इशारा करते हैं, जो अधूरा रह गया था और अब अपने अंजाम की ओर बढ़ रहा है। यही अनकहा तनाव टीजर को और भी प्रभावशाली बना देता है। फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसकी दमदार स्टारकास्ट मानी जा रही है। रणवीर सिंह के साथ संजय दत्त, अर्जुन रामपाल, आर. माधवन, राकेश बेदी और सारा अर्जुन की मौजूदगी कहानी को और मजबूती देती है। हर कलाकार अपने-अपने किरदार में लौटता नजर आ रहा है, जिससे यह साफ होता है कि सीक्वल सिर्फ नाम का नहीं, बल्कि कहानी की आत्मा को आगे ले जाने का प्रयास है। खासतौर पर संजय दत्त और अर्जुन रामपाल जैसे कलाकारों की झलक भर से ही दर्शकों के बीच चर्चा तेज हो गई है।

नेटफ्लिक्स का बड़ा ऐलान, भारतीय दर्शकों के लिए एंटरटेनमेंट का फुल डोज

ओटीटी की दुनिया में लगातार अपनी पकड़ मजबूत करता जा रहा नेटफ्लिक्स एक बार फिर भारतीय दर्शकों के लिए बड़े सरप्राइज लेकर आया है। मंगलवार को आयोजित एक खास इवेंट में नेटफ्लिक्स ने इस साल रिलीज होने वाली अपनी नई सीरीज और फिल्मों की झलक पेश की, जिसने दर्शकों की उत्सुकता को और बढ़ा दिया है। कंटेंट की इस नई लिस्ट में फैमिली ड्रामा से लेकर कोर्टरूम थ्रिलर, कॉमेडी और साउथ सिनेमा का दमदार तड़का देखने को मिलेगा। साफ है कि नेटफ्लिक्स इस साल हर तरह के दर्शकों को साधने की पूरी तैयारी में है। इस ऐलान के साथ ही सबसे ज्यादा चर्चा में रही नई सीरीज 'फैमिली बिजनेस', जिसका फर्स्ट लुक और टीजर सामने आते ही सोशल मीडिया पर छा गया। इस सीरीज में विजय वर्मा और अनिल कपूर पहली बार एक साथ नजर आने वाले हैं। दोनों कलाकार अपने-अपने अभिनय के लिए जाने जाते हैं और ऐसे में इनका आमना-सामना दर्शकों के लिए खास अनुभव साबित हो सकता है। सीरीज में रिया चक्रवर्ती की मौजूदगी भी चर्चा का विषय बनी हुई है। शुरुआती झलक से यह साफ है कि यह कहानी रिश्तों, सत्ता, पैसे और परिवार के भीतर छिपे तनावों के इर्द-गिर्द घूमेगी, जिसमें ड्रामा और सस्पेंस का भरपूर मेल होगा। नेटफ्लिक्स की इस नई लिस्ट में फिल्मों के शौकीनों के लिए भी खास पेशकश रखी गई है। प्लेटफॉर्म ने अपनी आगामी फिल्म 'इक्का' का औपचारिक एलान कर दिया है, जिसमें सनी देओल और अक्षय खन्ना आमने-सामने नजर आएंगे। फिल्म में सनी देओल एक वकील की भूमिका निभाते दिखाई देंगे, जबकि अक्षय खन्ना इस बार निगेटिव किरदार में नजर आएंगे। दिलचस्प बात यह है कि 'इक्का' के जरिए सनी देओल ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपना डेब्यू करने जा रहे हैं। बड़े पर्दे पर दमदार डायलॉग और गुस्सैल अंदाज के लिए मशहूर सनी देओल को डिजिटल स्पेस में देखना दर्शकों के लिए एक नया अनुभव होगा। वहीं, अक्षय खन्ना का खलनायक रूप फिल्म को और धारदार बना सकता है। कॉमेडी के दीवानों के लिए भी नेटफ्लिक्स ने खुशखबरी दी है। कपिल शर्मा की लोकप्रिय नॉन-फिक्शन सीरीज 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' के चौथे और पांचवें सीजन का ऐलान कर दिया गया है। तीन सफल सीजन के बाद यह फैसला नेटफ्लिक्स और कपिल शर्मा की मजबूत साझेदारी को और आगे बढ़ाता है।

आदित्य धर और अल्लू अर्जुन की संभावित जोड़ी, सिनेमा जगत में बड़े तूफान के संकेत

हिंदी सिनेमा को नई धार देने वाले निर्देशक आदित्य धर इन दिनों अपने करियर के सबसे दिलचस्प दौर से गुजर रहे हैं। उनकी हालिया फिल्म 'धुरंधर' ने बॉक्स ऑफिस पर जिस तरह का प्रदर्शन किया, उसने न सिर्फ कमाई के नए आंकड़े गढ़े बल्कि यह भी साबित कर दिया कि दर्शक अब मजबूत कंटेंट और दमदार प्रस्तुति को हाथों-हाथ ले रहे हैं। इस सफलता के बाद 'धुरंधरः द रिवेंज' को लेकर उत्साह पहले ही चरम पर है, जो 19 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। लेकिन इसी बीच एक और खबर ने फिल्मी गलियारों में सरगर्मी बढ़ा दी है, जो इस सीक्वल से भी कहीं आगे की कहानी बयां करती है। सूत्रों की मानें तो 'धुरंधरः द रिवेंज' के बाद आदित्य धर अपनी एक लंबे समय से अटकी और बेहद महत्वाकांक्षी परियोजना पर काम शुरू कर सकते हैं। खास बात यह है कि इस प्रोजेक्ट के लिए वह साउथ के सुपरस्टार अल्लू अर्जुन के साथ हाथ मिलाने की योजना बना रहे हैं। यह खबर सामने आते ही उत्तर और दक्षिण भारतीय सिनेमा के बीच एक बड़े सहयोग की चर्चाएं तेज हो गई हैं। कहा जा रहा है कि यह महज एक सामान्य फिल्म नहीं, बल्कि ऐसा सिनेमाई प्रयोग होगा, जो दोनों इंडस्ट्री के दर्शकों को एक साथ जोड़ने की क्षमता रखता है। बताया जा रहा है कि आदित्य धर और अल्लू अर्जुन के बीच इस प्रोजेक्ट को लेकर बातचीत कोई नई बात नहीं है। कुछ साल पहले आदित्य ने अल्लू अर्जुन को इस फिल्म की कहानी सुनाई थी। तब यह प्रोजेक्ट विभिन्न कारणों से आगे नहीं बढ़ पाया, लेकिन अब परिस्थितियां बदल चुकी हैं। 'धुरंधर' की सफलता और अल्लू अर्जुन की पैन-इंडिया लोकप्रियता ने इस सहयोग को एक बार फिर गंभीर चर्चा का विषय बना दिया है। अंदरखाने की खबरों के अनुसार, दोनों ही इस संभावित फिल्म को लेकर खासे उत्साहित हैं और इसे सही समय पर जमीन पर उतारने की तैयारी में हैं। इस प्रस्तावित फिल्म को लेकर जो बातें छनकर बाहर आ रही हैं, वे इसे और भी दिलचस्प बना देती हैं। चर्चा है कि यह कहानी पौराणिक कथाओं से प्रेरित हो सकती है, जिसे आधुनिक सिनेमाई भाषा और भव्य स्केल पर पेश करने की योजना है। अगर ऐसा होता है, तो यह फिल्म न केवल विजुअल ट्रीट साबित हो सकती है, बल्कि भारतीय सिनेमा की कहानी कहने की परंपरा को भी नए स्तर पर ले जा सकती है। आदित्य धर की गंभीर और गहराई वाली निर्देशन शैली और अल्लू अर्जुन की ऊर्जा, करिश्मा और अभिनय क्षमता का मेल दर्शकों के लिए किसी बड़े धमाके से कम नहीं होगा। हालांकि फिलहाल इस प्रोजेक्ट को लेकर कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। अल्लू अर्जुन इस समय अपनी आने वाली फिल्मों 'AA23' और 'AA22xA6' में व्यस्त हैं, जिन पर बड़े स्तर पर काम चल रहा है। ऐसे में आदित्य धर के साथ यह संभावित सहयोग समय ले सकता है। माना जा रहा है कि 'धुरंधरः द रिवेंज' की रिलीज और उसके बॉक्स ऑफिस प्रदर्शन के बाद मेकर्स इस नए प्रोजेक्ट को लेकर औपचारिक ऐलान कर सकते हैं। कुल मिलाकर, अगर यह साझेदारी सच में परवान चढ़ती है, तो यह हिंदी और साउथ सिनेमा के बीच एक यादगार अध्याय साबित हो सकती है। दर्शकों के लिए यह सिर्फ दो बड़े नामों का साथ आना नहीं होगा, बल्कि ऐसी कहानी देखने का मौका होगा, जिसमें भव्यता, भावनाएं और दमदार अभिनय एक साथ नजर आएंगे। फिलहाल फिल्म प्रेमियों की नजरें आदित्य धर और अल्लू अर्जुन पर टिकी हैं, क्योंकि अगर यह हाथ मिलन हो गया, तो भारतीय सिनेमा में वाकई एक बड़ा तूफान दस्तक दे सकता है।

हिंदी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

हिंदी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहारः रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रा वाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001,
भ्र.ध्व . क्र.:9224733113
ईमेलः rastriyaswabhimaan@gmail.com

06 मुंबई, बुधवार, 4 फरवरी 2026 महाराष्ट्र

• epaper.rashtriyaswabhimaan.com
• www.rashtriyaswabhimaan.com

एक पल की भी देर होती तो अनर्थ हो जाता

ठाणे में आपदा प्रबंधन और फायर ब्रिगेड की हिम्मत से 70 जानें बच गईं

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

ठाणे। मंगलवार को ठाणे में मौत दरवाज़े पर खड़ी थी। शास्त्री नगर नाका के पास मिलन हिल (ग्राउंड + 18 फ्लोर) बिल्डिंग की 10वीं मंजिल पर इलेक्ट्रिक डक्ट में लगी भीषण आग से हालात काबू से बाहर होते जा रहे थे। बिल्डिंग में घना धुआं फैल गया, 60 से 70 लोग फंस गए लेकिन उसी समय मनपा आपदा प्रबंधन और फायर ब्रिगेड फरिश्तों की तरह दौड़े और एक बड़ा हादसा टल गया।

सुबह करीब 4.14 बजे घटना की जानकारी मिलते ही आपदा प्रबंधन के अधिकारी और कर्मचारी यूटिलिटी गाड़ियों के साथ और फायर ब्रिगेड के अधिकारी और कर्मचारी फायर और रेस्क्यू गाड़ियों के साथ कुछ ही मिनटों में मौके पर पहुंच गए। आग से 10वीं और 13वीं मंज़िल के बीच बहुत ज़्यादा धुआँ फैल गया था और बिल्डिंग में रहने वाले 60 से 70 लोग अपनी जान बचाने के लिए फँस गए थे।हालात की गंभीरता को समझते हुए, फायर ब्रिगेड के लोगों ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया और सीढ़ियों, प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट और ब्रीदिंग अपैरेटस की मदद से लोगों को सुरक्षित नीचे उतारा।

वहीं आपदा प्रबंधन के स्टाफ ने पूरी बिल्डिंग में तालमेल बनाए रखते हुए, बिना घबराहट फैलाए, रेस्क्यू ऑपरेशन को अच्छे से चलाया।10वीं मंज़िल पर दो फ्लैट में फँसे सात लोगों को सुरक्षित बचा लिया गया। हालाँकि कुछ घरों को नुकसान पहुँचा, लेकिन इस ऑपरेशन की सबसे बड़ी कामयाबी यह रही कि किसी की जान नहीं गई।घटना की गंभीरता को समझते हुए आपदा प्रबंधन अधिकारी यासीन तड़वी और फायर स्टेशन के डिप्टी फायर ऑफिसर प्रशांत मुलिया मौजूद थे। फायर ब्रिगेड के लोगों की मदद से, उन्होंने तुरंत दो घायल सीनियर सिटिज़न्स को इलाज के लिए हॉस्पिटल में भर्ती कराया। उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है।सुबह करीब 5.30 बजे आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया। पूरे ऑपरेशन के दौरान आपदा प्रबंधन और ठाणे फायर ब्रिगेड ने जो तेज़ी दिखाई, उसकी हर जगह तारीफ़ हो रही है।

अजीव यशवंत पाटील बने वसई–विरार मनपा के सातवें महापौर

मार्शल डोमिनिक लोपिस उपमहापौर निर्वाचित

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

वसई-विरार। वसई-विरार शहर महानगरपालिका (वीवीसीएमसी) को आज नया नेतृत्व मिला। महापौर पद के लिए हुए चुनाव में बहुजन विकास आघाड़ी (बविआ) के प्रत्याशी अजीव यशवंत पाटील को विजयी घोषित किया गया। वे वसई-विरार महानगरपालिका के सातवें महापौर बने। वहीं उपमहापौर पद पर मार्शल डोमिनिक लोपिस निर्वाचित हुए।

महापौर पद के चुनाव में अजीव यशवंत पाटील को 71 मत प्राप्त हुए, जबकि भाजपा समर्थित प्रत्याशी एड. दर्शना त्रिपाठी कोटक को 44 मत मिले। इसी तरह उपमहापौर पद पर मार्शल डोमिनिक लोपिस को भी 71 मत मिले, जबकि भाजपा प्रत्याशी नारायण मांजरेकर को 44 मत ही प्राप्त हुए। यह चुनाव प्रक्रिया वीवीसीएमसी मुख्यालय में शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई, जिसमें दोनों पक्षों के नवनिर्वाचित नगरसेवक और नगरसेविकाएं उपस्थित रहीं।

इस अवसर पर पालघर कलेक्टर इंदुराणी जाखड़, मनपा आयुक्त मनोज रघुवंशी सहित बविआ प्रमुख हितेंद्र ठाकुर, राजीव पाटिल और पूर्व विधायक क्षितिज ठाकुर जैसे गणमान्य लोग भी मौजूद थे।

चुनाव से पहले 'ऑपरेशन लोटस' और क्रॉस वोटिंग जैसी चर्चाओं के बीच मतदान के दौरान ऐसी कोई स्थिति सामने नहीं आई। सभी मत पार्टी अनुशासन के अनुसार पड़े और किसी प्रकार की बहिष्कार या टूट-फूट की घटना नहीं हुई।

परिणाम घोषित होते ही विजयी महापौर और उपमहापौर अपने समर्थकों के साथ वीवीसीएमसी मुख्यालय पहुंचे, जहां उनका स्वागत किया गया। नगरसेवकों और समर्थकों ने नवनिर्वाचित महापौर और उपमहापौर को बधाई दी और उम्मीद जताई कि उनके नेतृत्व में वसई-विरार शहर के विकास कार्यों को नई गति मिलेगी।

नो ब्रोकर ऐप पर घर दिलाने का झांसा, महिला से डेढ़ लाख की ठगी

आर.एस.नेटवर्क। संवाददाता

मुंबई। नो ब्रोकर ऐप के जरिए किराए पर घर लेने की कोशिश एक महिला को भारी पड़ गई। अज्ञात व्यक्ति ने अलग-अलग बहानों से पैसे ऐंठकर महिला से करीब 1.5 लाख रुपये की ठगी की। इस मामले में पवई पुलिस स्टेशन में धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया गया है।

शिकायतकर्ता महिला का नाम जयश्री भाग्यवान (31) है। पवई इलाके में किराए का घर तलाशने के लिए उन्होंने 3 जून को नो ब्रोकर ऐप पर रजिस्ट्रेशन किया था। इसके बाद उनके पति महेश के मोबाइल पर एक मैसेज आया, जिसमें पवई स्थित एक फ्लैट की जानकारी दी गई थी। संपर्क करने पर सामने वाले व्यक्ति ने अपना नाम आशीष परिहार बताया और आगे बातचीत के लिए दूसरा मोबाइल नंबर दिया।

आरोपी ने जयश्री को रहेजा विहार स्थित सनसेट-2 में फ्लैट दिखाने के लिए बुलाया। फ्लैट पसंद आने के बाद आरोपी ने 40 हजार रुपये टोकन अमाउंट और 2 लाख रुपये डिपॉजिट की मांग की। विश्वास में आकर जयश्री ने 1 लाख 40 हजार रुपये ट्रांसफर कर दिए। इसके बाद आरोपी लगातार बाकी रकम के लिए दबाव डालने लगा। शक होने पर जयश्री ने पास के फ्लैट में रहने वाले लोगों से पूछताछ की, तब पता चला कि पैसे मांगने वाला व्यक्ति उस फ्लैट का मालिक ही नहीं है। ठगी का एहसास होते ही उन्होंने पवई पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

शर्मिला पिंपोलकर ठाणे की मेयर

कृष्णा पाटिल डिप्टी मेयर चुने गए

आर.एस.नेटवर्क। संवाददाता

ठाणे। ठाणे महानगरपालिका के मेयर और डिप्टी मेयर पद के लिए मंगलवार को हुए निर्विरोध चुनाव में शिवसेना की शर्मिला पिंपोलकर मेयर और भाजपा के कृष्णा दादू पाटिल डिप्टी मेयर चुने गए। इसकी आधिकारिक घोषणा पीठासीन अधिकारी एवं जिलाधिकारी डॉ. श्रीकृष्णनाथ पांचाल ने की।

यह चुनाव आज सुबह 11:30 बजे ठाणे मनपा के भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ऑडिटोरियम में आयोजित विशेष महासभा में संपन्न हुआ। चुनाव परिणाम की घोषणा के बाद मनपा आयुक्त सौरभ राव ने नवनिर्वाचित मेयर और डिप्टी मेयर को तुलसी का पौधा देकर बधाई दी।

डेयरी मालिक के 4.50 लाख रुपये का गबन, ड्राइवर के खिलाफ मामला दर्ज

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

भिवंडी। दूध के बिल का भुगतान करने के लिए दिए गए नकद पैसों का गबन करने का मामला भिवंडी में सामने आया है। इस प्रकरण में डेयरी मालिक के ड्राइवर के खिलाफ कोनगांव पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस के अनुसार, भिवंडी ब्राह्मण अली निवासी नरेंद्र सिंह मधुकर देवरे (30) की दूध की डेयरी है। उन्हें रबाले स्थित दूध आपूर्तिकर्ता राजू यादव को भुगतान करना था। इसके लिए 1 फरवरी की रात करीब 10:30 बजे सरवली पाडा इलाके में उन्होंने अपने ड्राइवर संतोष राजाराम सिंह (40, निवासी नवी मुंबई) को भरोसे के साथ 4.50 लाख रुपये नकद सौंपे थे।

आरोप है कि ड्राइवर संतोष ने यह रकम दूध आपूर्तिकर्ता तक नहीं पहुंचाई और पैसों का गबन कर लिया। मामले की जानकारी मिलने के बाद डेयरी मालिक ने कोनगांव पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसके आधार पर आरोपी ड्राइवर के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी गई है।

बारामती दूध संघ का नाम बदला, अब होगा "सहकार महर्षि अजितदादा पवार सहकारी दूध उत्पादक संघ"

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

बारामती। कात्रज दूध संघ के फैसले के बाद अब बारामती तालुका दूध उत्पादक संघ ने भी बड़ा निर्णय लिया है। संघ की संचालक मंडल की बैठक में सर्वसम्मति से संस्था का नाम बदलने का निर्णय लिया गया है। अब बारामती दूध संघ को "सहकार महर्षि अजितदादा पवार सहकारी दूध उत्पादक संघ मर्यादित" के नाम से जाना जाएगा। यह जानकारी संघ के चेयरमैन संजय रामचंद्र कोकरे और उपाध्यक्ष दत्तात्रय सदाशिव वावगे ने दी।

उन्होंने बताया कि दिवंगत उपमुख्यमंत्री अजितदादा पवार के मार्गदर्शन में बारामती दूध संघ ने निरंतर प्रगति की। उनके नेतृत्व में संघ ने कई महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट शुरू किए और दूध उत्पादक किसानों को हमेशा मजबूत समर्थन दिया। सहकार आंदोलन को दिए गए उनके योगदान के सम्मान और उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाए रखने के उद्देश्य से यह नामकरण किया गया है। बैठक में संघ के सभी संचालक, प्रबंध निदेशक डॉ. योगेश राणे और उप महाप्रबंधक अमोल चव्हाण उपस्थित थे। संघ का पैकिंग दूध और दुग्धजन्य उत्पाद "नंदन" ब्रांड के तहत पुणे, मुंबई, लोणावळा, अहिल्यानगर, संभाजीनगर, सोलापुर सहित कई शहरों में उपलब्ध हैं। साथ ही होटल, कॉर्पोरेट कार्यालय, अस्पताल और नामांकित कंपनियों में भी इन उत्पादों की आपूर्ति की जाती है।

उधर, पुणे जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ (कात्रज) ने भी अपने नाम में परिवर्तन कर इसे "अजितदादा पवार पुणे जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ, कात्रज" करने का निर्णय लिया है। संघ ने कहा कि अजितदादा पवार का आकस्मिक निधन सहकार क्षेत्र के लिए अपूरणीय क्षति है।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, प्रेमी ने अश्लील तस्वीरों से दी धमकी

गहने भी हड़पे

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

भिवंडी। शादी का झांसा देकर एक युवक द्वारा युवती के साथ लंबे समय तक दुष्कर्म करने और बाद में उसे बदनाम करने की धमकी देकर सोने के गहने हड़पने का गंभीर मामला भिवंडी के कामतघर इलाके से सामने आया है। इस मामले में आरोपी प्रेमी के खिलाफ नारपोली पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है। आरोपी की पहचान सूरज बालाजी लहुटे (23) के रूप में हुई है, जबकि पीड़िता की उम्र 21 वर्ष बताई जा रही है।

पुलिस के अनुसार, आरोपी सूरज ने वर्ष 2019 से अक्टूबर 2024 के बीच शादी का झांसा देकर पीड़िता की मर्जी के खिलाफ कई बार उसके साथ दुष्कर्म किया। इस दौरान उसने पीड़िता की अश्लील तस्वीरें भी लीं और बाद में उन्हें दूसरों को भेजकर बदनाम करने की धमकी देने लगा। आरोप है कि इसी डर का फायदा उठाकर आरोपी ने पीड़िता से उसकी सोने की चेन और उसकी मां का 10 तोले का सोने का मंगलसूत्र भी अपने कब्जे में ले लिया। जब पीड़िता को आरोपी की धोखाधड़ी का एहसास हुआ, तो उसने 2 फरवरी को नारपोली पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया है। फिलहाल आरोपी फरार है और उसकी तलाश जारी है। पुलिस का कहना है कि मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच तेज कर दी गई है और जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार किया जाएगा।

तीन बेटियाँ होने पर विवाहिता का अमानवीय उत्पीड़न

पति और उसकी प्रेमिका समेत चार पर मामला दर्ज

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

भिवंडी। बेटे की चाहत में एक विवाहिता को अमानवीय प्रताड़ना देने का गंभीर मामला भिवंडी के भादवड इलाके से सामने आया है। यहां एक 35 वर्षीय महिला को तीन बेटियाँ होने के कारण उसके ही पति, सास, ननद और पति की प्रेमिका ने मिलकर शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। आरोप है कि महिला के चरित्र पर संदेह जताते हुए उसे उसकी तीनों मासूम बेटियों के साथ घर से बाहर निकाल दिया गया।

पीड़िता ने अंततः शांतिनगर पुलिस स्टेशन पहुंचकर न्याय की गुहार लगाई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर पति प्रकाश श्रीहरी कांबले, सास विजयमाला श्रीहरी कांबले, ननद कल्पना दत्तात्रय वाघमारे और पति की प्रेमिका के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

पुलिस के अनुसार, पीड़िता का विवाह 20 अक्टूबर 2012 को हुआ था। शादी के बाद तीन बेटियों के जन्म के बाद से ही ससुराल पक्ष उसे बेटे को जन्म देने के लिए लगातार ताने देने और मानसिक रूप से प्रताड़ित करने लगा। महिला का आरोप है कि इसी दौरान उसके पति का एक अन्य महिला से प्रेम संबंध हो गया और वह उससे दूसरा विवाह करना चाहता था। पीड़िता का कहना है कि पति और उसके परिजनों ने उस पर दूसरे विवाह के लिए सहमति देने का दबाव बनाया। जब उसने इसका विरोध किया, तो उस पर झूठे आरोप लगाए गए, उसके चरित्र पर सवाल उठाए गए और उसके साथ मारपीट की गई। लगातार बढ़ते अत्याचारों के बीच 12 जनवरी को आरोपियों ने महिला और उसकी तीनों बेटियों को घर से बाहर निकाल दिया। बेघर होने और प्रताड़ना से परेशान होकर महिला ने पुलिस का दरवाजा खटखटाया। शांतिनगर पुलिस ने प्राथमिक जांच के बाद 2 फरवरी को चारों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। मामले की आगे की जांच पुलिस उपनिरीक्षक पोटे कर रहे हैं।

यह मामला एक बार फिर समाज में गहराई से जड़ जमाए बेटे की चाहत और महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की भयावह सच्चाई को उजागर करता है।

"म्हाडा" प्रथम आएंगे उन्हें मिलेगा प्राथमिकता के आधार पर 120 घर

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

मुंबई। म्हाडा अपनी विभिन्न वसाहतियों में 120 घर 'प्रथम आएगा, प्रथम पायेगा' के आधार पर बेचने जा रहा है। घरों की कीमतें 31 लाख रुपये से शुरू होकर अधिकतम 8 करोड़ रुपये तक होंगी। सबसे महंगे घर ताडदेव में होंगे। इस विक्रय में पहले लॉटरी के माध्यम से बेचे जाने वाले लेकिन खाली रह गए घर भी शामिल हैं।

घर के लिए ऑनलाइन आवेदन 5 फरवरी को सुबह 11 बजे से शुरू होंगे। आवेदन जमा करना, नामांतरण राशि का भुगतान और घर सुनिश्चित करने की प्रक्रिया 12 फरवरी से शुरू होगी। घर सुनिश्चित करने के 48 घंटे के भीतर घर की कीमत का 10 प्रतिशत भुगतान करना अनिवार्य होगा। शेष राशि 90 दिनों के

भीतर जमा करनी होगी, अन्यथा ब्याज सहित भुगतान करना आवश्यक होगा। भुगतान केवल ऑनलाइन माध्यम से NEFT, RTGS, नेट बैंकिंग, UPI, डेबिट या क्रेडिट कार्ड के जरिए किया जा सकेगा।

म्हाडा ने किसी भी प्रॉपर्टी एजेंट को नियुक्त नहीं किया है। किसी भी अनधिकृत व्यक्ति के साथ किए गए लेन-देन के लिए म्हाडा जिम्मेदार नहीं होगा। आवेदन केवल ऑनलाइन माध्यम से ही किया जा सकेगा।

विक्रय के लिए घर शिंपोली, कांदिवली, अँटॉप हिल, वडाला, तुंगा, पवई, मानखुर्द, मालवणी, मालाड, घाटकोपर, भायखळा, लोअर परळ, सायन, अंधेरी और ताडदेव में उपलब्ध होंगे। कुल 120 घरों की बिक्री की जाएगी। इस निर्णय से मुंबई में घर लेने के इच्छुक लोगों को अवसर मिलेगा और म्हाडा की वसाहतियों में पहले खाली रहे घर अब बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे।

मध्य रेल्वे के 12 कर्मियों को महाव्यवस्थापक ने सुरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया

आर .एस. नेटवर्क। संवाददाता

मुंबई। मध्य रेल्वे के 12 कर्मियों को 3 फरवरी 2026 को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस में आयोजित कार्यक्रम में महाव्यवस्थापक श्री प्रतीक गोस्वामी द्वारा सुरक्षा पुरस्कार प्रदान कर उनका सम्मान किया गया। इन कर्मियों ने कर्तव्य पालन के दौरान सतर्कता और त्वरित कार्रवाई के जरिए संभावित दुर्घटनाओं को रोका। पुरस्कार में पदक, प्रशस्तिपत्र और 3,500 रुपये का नकद पुरस्कार शामिल था।

मुंबई विभाग: लक्ष्मण रघुनाथ जाखरे, कॉंटेवाला, आटगावः प्लेटफॉर्म और गाड़ी के बीच गिरते हुए यात्री को बचाया।

पंढरीनाथ सोमा नाडेकर, ट्रेन व्यवस्थापक, कल्याण: MUCK विशेष गाड़ी में धुआँ निकलते देख तुरंत सूचना दी।

रणजीत कुमार यादव, हेल्पर (एस एंड टी), ठाणे: रेल्वे रूट में तुड़ान देख तुरंत सुधार कर संभावित दुर्घटना टाली।

नागपुर विभाग: अनुराग श्रीवास्तव, सहाय्यक कॉंटेवाला, तडालीः धावती मालगाड़ी में आग लगते देख गाड़ी रोकी और जानकारी दी।

प्रदीप निर्मळ, हेल्पर (एस एंड टी), आमला: पॉइंट रूट में नुकसान देख तुरंत सूचना दी।

उमेश मौर्य, लोको पायलट (शंटर), घुग्घुसः रेल्वे रूट में तुड़ान देख संबंधितों को सूचना दी।

भुसावळ विभाग: फुल कुमार गौतम, लोको पायलट (गुड्स), भुसावळः ट्रैक मेंटेनर को खतरे से बचाने के लिए आपातकालीन ब्रेक लगाया।

राहुल चंदा, एमएसएम (कॅरेज अँड वॅगन), भुसावळ: मालगाड़ी के डिब्बे में दोष देख तुरंत सुधार कराया।

विजय सुरडकर, कॉन्स्टेबल (आरपीएफ), **जळगाव:** गाड़ी में गिरते यात्री को तुरंत बचाया।

सोलापुर विभाग: उमेश रमेश बदर, कनिष्ठ अभियंता (टीआरडी), **कुर्डुवाडी:** जंपर टूटने की सूचना देकर रेल्वे ट्रैक की सुरक्षा सुनिश्चित की।

भानुदास एन. शेळके, ट्रैक मेंटेनर, अरगः मालगाड़ी के डिब्बे का फ्लैट टायर देखकर तुरंत सूचना दी।

पुणे विभाग: कंचन कुमार, वरिष्ठ विभाग अभियंता (पी.वे), सांगली: मालगाड़ी के डिब्बे का फ्लैट टायर देख तुरंत सुधार कराया। महाव्यवस्थापक ने सभी कर्मियों की कर्तव्यनिष्ठा और सतर्कता की सराहना की और कहा कि उनकी कार्रवाई अन्य कर्मचारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी तथा इससे रेल यात्रियों और माल की सुरक्षा सुनिश्चित होगी।